दुसरो बढ़ि बीर बिराट भयो ॥ इमि देवन जीति अदेव महा। गरज्योकहि मैं अब एक रहा ३४९ ॥

दो० असुर इन्द बिनती करहिं जय जय शब्द सुनाय।
सुर पूजित सुख चारसो लसोतहां छबिछाय३५० ॥

चौपाई ॥

तबसों गयो विष्णुके आगे। प्रेरित मृत्यु मरणके लागे ॥ देख्यो खगासीन छबिछावत। अरि अरदनहित गदा फिरावत ३५१ ॥ श्याम तामरस मोचन लोचन। कोटि काम कहं भरत सकोचन ॥ पीतबसन पुनीत बनमाला। कुण्डल झलक कपोल रसाला३५२॥ भुज उदार बसुचार सुहाये। जिनमहं भूषण रतन जराये ॥ एक हाथमहं लसत सुदरशन। अरि असुकरसन जाको दरशन ३५३ ॥ सोइ भक्तन कहं परम सुदरशन। शुभ समताकहं करै सुदरशन ॥ दरशत सहस आर अति भारे। छण महं बज्र गिरि भेदन हारे ३५४ ॥

कबित्त ॥

एक एक आरन मैं फिरत हजारन हैं धारण त्रिशूल सुखचारणके समुदाय। लाखन दिनेश औा दिनेश अमरेश गण घूमहिं धनेश औा जलेश योधा यमराय ॥ गिरधरदास नेकु प्रभाके प्रकाश होय विश्वको बिनाश कौन जानै जो लरनजाय। देवदल हरषाय दैत्यदल थरसाय अरिरूप सरसाय हरिकर दरशाय ३५५ ॥

दो० रतन अनेकन जगमगैं अग्र शस्त्र शिर मोर।
भयोसुदरशनको तबहिंदरशन तेहितेहि ठौर३५६ ॥

चौपाई ॥

सोहत कंबु चारु कर दूजे। जाकहं पूजाहं तिहुंपुर पूजे ॥ राजहंस सो बरण सोहायो। गाय सकहिं कोउ नहिं नहिं गायो ३५७ ॥

सवैया ॥

दारत दानव दीन फिराद सेाैं पूरत देव हृदै अहलाद सेाैं। चारहुं बेदबसैं सुखअग्र समग्र बसैं सुर मध्यहि स्वाद

सों ॥ तीरथ अन्त में सन्त में पूजित जीत तुरन्त में देत सुनाद सों । धारण ताहि किये करमैं गिरिधारण ध्याइ भये मरजाद सों ३५८ ॥
दो० पंचजन्य सम अन्य नहिं कोउ बाजन तिहुंलोक ।
अमरथोक उर सुखभरन करन असुर उर शोक ३५९ ॥
चौपाई ॥
तबसो गदा लखो अति भारी । दानव दर्प बिनाशन कारी ॥ जाके बल गतभीत सदाई । करहिं अमरगण शंख बजाई ३६० ॥ कवित्त ॥
गरुता समुन्द दीन दंदकी हरणहारी मोहति दुचन्द श्रीमुकुन्द पाणिमें सदा । नेकुहो प्रहारनि प्रहारनि करति रजटारनि सकल सुर सन्तन की आपदा । छूटतहीं छूटतिहै रण दुश मन प्राण दैतन की भीति आस टूटनि छटै यदा । हरति प्रकाश भासमान को प्रकाश करि गिरिधर दास ऐसो खासहरि की गदा ३६१ ॥
दो० केशव की कौमोदकिहि बरणि सकै कवि कौन ।
तौनलखी अतिद्युतिभरी अविबुध अवनी रौन ३६२ ॥
चौपाई ॥
तब निरख्यो पंकज छबि छायो । जो बिधिहूकी आदि गनायो ॥ बर बरणिका करणिका ताकी । शीतल नैन होत जिहि ताकी ३६३ ॥
कवित्त ॥
अतिअभिराम ता ललामता है बरसति दसगुनोदीपति बढ़ति रोज रोजहै ॥ कमलाको ऐन और आदि कमलासन की कमला निवास प्रियभस्यौ छबि ओजहै । गिरिधरदास आसपास में सुवास पगी करतबिलास अलिमत्तनकी फौज है ॥ शोभित सुखद शोभासिंधु शुभश्याम करसुर मधुसूदन सुभाविक सरोजहै ३६४ ॥
दो० कमलनयन के कमलकर कमल निरखि दनुजेश ।
कमल मित्र उदये निरखि भयो कुमुदके भेश ३६५ ॥

चौपाई ॥

तब निरख्यो सारंग सुहायो। जानै रण हर धनुहिं लजायो॥ जातें निसरि सर्पसे बाण। रणमहिं हरहिं असुर के प्राण ३६६ ॥ कवित्त ॥

जाके बलही सों देवताके गण राजकरैं होयकै निपूती सदा आपदेति दनुहै। धारतहो हाथ मैं चिकारत दिशा के कुरि पारत प्रलैसो जनद्रोही गनतनुहै॥ गिरिधरदास जबै बाणहन्द बरसत लाजकों लहत प्रलैकालको जोंघनुहै। सारङ्ग नयनजू के सारंग से हाथ बीच सारंग बरण शुद्ध सारंग सोधनुहै ३६७॥

दो० तैसेई शर सरपसे दरप भरे हरकाल।
सरपिसरपिदुतसमरमैंकरहिं अमरअरिकाल३६८॥

चौपाई ॥

तब हरि हाथ निहारयौ नन्दक। बिधिहरादि हैं जाके बंदक॥ तीक्षण धारसकै को बरनी। रोवैं बड़ रुधिरासन घरनी ३६९॥ सवैया ॥

म्यानके है दरम्यान परी करिध्यान कहै असज्ञान धरै को। प्यारी महा गिरिधारन की जब धारीकरै तब धीर लरैको॥ लाखन शीश निमेष में काटति धारपरे सहप्राण तरैको। चारुरही लसि सो असि श्यामकी मूठकी कीमति भूठ करैको ३७०॥

दो० बारि बारि तरवारिपैं दीजै बिज्जुसमूह।
जाहि निरखि उलटेफिरहिं दानव योधाजूह ३७१॥

चौपाई ॥

तब बिशाल हरि ढाल निहारी। बरणिसकै को अस मतिधारी॥ बरतुल बरतुल जासु न कोई। सरकुल गर्व खर्व करसोई ३७२॥ कवित्त ॥

चारु अर्द्धचन्द अर्द्धचन्दतें दुचन्द द्युति सुखमा को फन्द जामें सोहत परम है। भांतिभांति जटित जवाहिरके पांति२ कांतिधर फूल तामें ताराकी भरम है॥ गिरिधरदास वज्र

शूलहू कों मोघकरै रणमहि जेठरवि घरम गरमहै। अरि को भरम हारी बरम करमकारी चरमरचित ऐसो श्याम को चरमहै ३७३ ॥

दो॰ असुर कालकी ढाल सो श्यामरंग दरसाय।
जाहि देखि दानवसयन सभय भागि दुरिजाय ३७४ ॥

चौपाई ॥

तब हरि हाथ पास अवलोकी। त्रणमहं लोसक बांधि त्रिलोकी ॥ पाशी पाशपास जबजाई। लखतहि आतुर फिरै लजाई ३७५ ॥

सवैया ॥

लाखन फंदपरे जिहिमें मतिमंद अरातिनकों करैनाशहै। मन्दरहू कहं बांधि सकत्ति पुरंदर सेहू भटैवै प्रयास है ॥ हाथ धरे गिरिधारनजू मतिट्टन्दन को अतिशी परकाशहै। पाश है पाशतौ भूमिअकाशलौं पास है यातें लसै बरपास है ३७६ ॥

दो॰ त्रासभरे असुराधिपपास देखि हरिपास।
कालनेमि बलतें रहे खरेगिनै जे खास ३७७ ॥

चौपाई ॥

हरिहि देखि उरको अघ खोल्यो। बज्र वचन चढ़ि दानव बोल्यो ॥ यहीविष्णु देवनको स्वामी। शंख चक्र धर नभ चरगामी ३७८ ॥ याकेबल सुरसंगर जीतहिं। सदा असुर गणको वधचीतहिं ॥ इहीदीह दानव कुलहंता। याहि भजहिं भिक्षुक तपवंता ३७९ ॥ दानव बेधुवंस को दावा। आजु याहि हम सन्मुख पावा ॥ हिरणकशिपु दोउ भाई भारे। मेरे जनक इन्हों ने मारे ३८० ॥ मधु कैटभ इन्हहीं बधिडारे। बड़े बड़े दानव संहारे ॥ आजुमारि इहिआ-नंद लैहैं। सुरन हारि असुरन जयदैहैं। ३८२ ॥ अबतूनाहिं बचत बनमाली। इमि कहि चला गरजि अघशाली ॥ सुनि कै असुर वचन जग नायक। मधुर विहंसि बोले सब लायक ३८३ ॥ अल्पवीर्य बज्रसमुभत मनमें। जल्पहिं क्रूर सूरनहिं रणमें ॥ आजु मारि तोहि व्याधि नशैहैं। निज निजघल सबदेव बसैहैं ३८४ ॥

दो॰ इमि सुनि कै हरि के वचन हंसि दानव सिर मौर।
तजनलग्यो सब करनसों अस्त्रशस्त्र तिहिठौर ३८४ ॥
चौपाई ॥
बहुरि घुमायगदा अतिभारी। पन्नगारिके ऊपरमारी ॥ तातें व्यथितहोय खगस्वामी। भयेजानु बलभूतलगामी ३८५ ॥ सो लखि अतिरिसि हरिकों आई। बहुरि दनुज वर गदा चलाई ॥ ताहि पकारि हरिफेरि प्रहारी। सिरकाट हस्यौ चक्र निज मारी ३८६ ॥ तिन सों विगत लख्यो सो कैसे। विगत शिखर गण पर्वत जैसे ॥ बहुरि धरा अरि धरहि गिरायो। देवन जयजय शब्द सुनायो ३८७ ॥ तब बढ़िभिरे महाबल शाली। दोऊ बंधु सुमालीमाली ॥ तिन के शिर हरि चक्र निकारी । काटिदिये अवनी पर डारी ३८८ ॥ अनुजन मरत देखि तिहिकाल । माल्यवान बढ़ि असुर कराल ॥ महाबलसी गदा घुमाई। मास्यौ गरुड़हि कोप बढ़ाई ३८९ ॥
दो॰ जब सौं चक्र प्रहारि कै काटि शत्रु शिर आसु।
भूमि गिरायो देव पति करन शत्रु कुल नासु ३९० ॥
सो॰ माया गत रण पाय छायरहे उरमोद सुर।
बढ़िबढ़िशंखबजाय दल्योआसु दानव दलहि ३९१ ॥
चौपाई ॥
तेहि क्षण बासव वज्र उठाई। बलिसों बोले रोस बढ़ाई॥ रेशठ तू माया करि करिकै। जीतत बालन अघ मति धरिकै ३९२ ॥ आजु वज्र तें हरि शिर तोर। परम मोद दैहों सुर ओर ॥ सुनि हंसि बलि दानी शिर मंडन। बोले चंड अपर बलखंडन ३९३ ॥ जेरणकरहिं वीर मत धारी। तामैं अवशि जीतिकै हारी ॥ कर्म विवश जनजीवहिं मरहीं। पण्डित तासु शोच नहिं करहीं ३९४ ॥ इमि कहि चापकर्ण कौं मास्यो। तानी विशिख वज्र से मास्यो ॥ तेहि सहि महा क्रोध सों भरिकै। बोले अब न बचत तू ठरिकै ३९५ ॥

दो॰ बज्र पाणि कर बज्र लै मार्‌यौ तीक्षण धार।
सरथ गजगत बलिगिरो भो अति हाहाकार ३९६॥

चौपाई॥

सो लखि जंभ महा रिसिआयो सिंह सवार आसु तहं आयो॥ कर पर दरशि गदा लै भारी। गज समेत सुरराजहि मारी ३९७॥ लगे प्रहार व्यथित ऐरावत। भयो जानुबल भूतल आवत॥ तब मातलि रथ लायो धोरे। दश शत जिन महं जोरे घोरे ३९८॥ गज तजि रथहि चढ़े सुरराज। निरखि हर्‌यो दानव शिरताज॥ तबहिं शूल मातलि उर मारो। ता कहं सहि रहि गयो बिचारो ३९९॥ तब वासव बढ़ि बज्र प्रहार्‌यौ। काटि जंभ सिर भूपर डार्‌यौ॥ जंभ बधन नारद सों सुनिकै। नमुचि पाक बल धाये गुनिकै ४००॥ रे रे इंद्र महा अघकारी। छल रत सदा भीरु उर भारी॥ आसु मारि तोहि भूमि गिरैहैं। बलि मारणको शोक हिरैहैं ४०१॥ इमि कहि कहि बलनिधि भट तीनो। शरण शक्र रथ छादित कीनो॥ बलबलधर बलिरिपुहि प्रचार्‌यौ। सहत बाण घोरन कहं मार्‌यौ। ४०२॥ पाक सहस रथके मधि हनिकै। शत शरहते मातलिहि गनिकै॥ नमुचि पंचदश अति अनियारे। महाकोप भरि इंद्रहि मारे ४०३॥

दो॰ बरषि बाण अश्चिण से तीनऊं तेहि थल कोपि।
सरथ शक्रकहं आसुही दियो गोपि उर चोपि ४०४॥

चौपाई॥

सो लखि देव सकल भय छाये। हाहा करत भये घबराये॥ काटि बाण पंजरको रन्दर। ता अन्दर तें कढ़े पुरन्दर ४०५॥ धारनकेतु देतु छबिभारी। धारणकिये कुलिश असुरारी॥ तब लौं दनुजन अनुजन को दल। दलिकै करत भये अति हलचल ४०६॥ सहस नैन निज सैन निहारी। जिमि खेती तुसार की मारी॥ अष्टधार युतबज्र उठायो। शत्रुन ऊपर आसु चलायो ४०७॥ मारि पाक शासन बल

पाकहि। रणमें करत भये निज साकहि॥ सो लखि कोप
शोक, उरछाई। गरज्यो नमुचि असुर कदराई ४०८॥
घण्टा वृन्द विभूषित भारी। निर्मित रत्न शूल करधारी॥
अब न बचत तूं इमि ललकारी। मार्यो अरिहि
सजोर सुरारी ४०९॥

दो० ताहि अमित शरमारिकै ब्योमहिं काट्यो शक्र।
हन्यौ नमुचिशिर कुलिशसों बज्रहि नैनकरि बक्र ४१०॥

शिरधर धरि सोउठा बहोरी। लरै समर महं भांति
अघोरी॥ देखि जियत तेहि तहं रणदेश। मनमहं सोचत
भये सुरेश ४११ याते बधे अनेकन बीर। इन महा तप
पुंज शरीर॥ बड़े बड़े पर्वत के पक्षण॥ काटि कियो
तिहुपुर को रक्षण ४१२॥ सो हम अस्त्र असुर पर मारो।
मरिकै जियो सोच यह भारो॥ हृदय बिचार करत इमि
ज्ञानी। तिहि क्षण होतभई नभवानी ४१३॥ गीले सूखे
मरिहै नाहीं। यह बरदान अहै इहि पाहीं॥ ताते दूजो
करहु उपाई। जामहं मरै अमर दुख दाई ४१४ सो सुनि
बात हृदय महं धारी। फेन लख्यो गत हय क्रतु कारी॥
शुष्कन गीलो शुचि कर लीनो। परि हरि अरिहि शीश
बिनु कीनो ४१५॥

दो० देव कुसुम बरसत भये करहिं गंधरप गान।
गावहिं नाचहिं अपसरा ताकहिं चढ़ी बिमान ४१६॥

चौपाई॥

अपर असुर जे रणमद माते। लरत रहे तेहि थल दर-
शाते॥ तिनहिं अनल अनिलादिक याधा। शमन हत्यो
भरि भरि क्रोधा ४१७ तब विधि तहं नारदहि पठायो।
तिन तहं आय सुरन समुझायो॥ हरि प्रताप तुम अद्भुत
पायो। जीति लही बलि शत्रु नशायो ४१८॥ अबन लरहु
नृप नीति बिशारद। इमि कहि गये भवन चलि नारद॥
तजि हत शेष दनुज गत शङ्का। सुर निज पुर प्रविशे दै
डङ्का ४१९॥ बचे असुर तब भय गत ह्वैकै। बलि आदिक

के सिर धर लैकै ॥ अस्ताचल महं राख्यो सबहीं । कवि तहं तिन्हहि जिवायो तबहीं ४२० ॥ ते जीये जिनके हे गिरधर । संजीवन विद्याके बल बर ॥ बलि उठि तेहि छण वैसे कैसे । सोयो उठै नींद गत जैसे ४२१ ॥

हरिगीती छन्द ॥

गतनींद से उठि आपु वैसे हारि खेदहि नहिंकियो । जग विदित ज्ञान निधानसो भवतव्य गुणि मनमें लियो ॥ इमि उन्नइस ग्रत आठकातिक क्ष्ण आठैदिन रच्यो । कच्छप चरित फल चारि प्रद सुनि जो श्रवण मङ्गल सच्यो ४२२ ॥

दे॰ सच्यो आपुही एक वपु धर्‌यो एक वपु शैल ।
तिनहिंत्यागि औरहि भजैसो असमानवमैल ४२३ ॥

सो॰ सुरगणजिनकी आस दिविराजत करिमनहिंथिर ।
भारतगिरिधरदास तिनहरिपदकोधूरिशिर ४२४ ॥

इति श्री गिरधरदास विरचितं कच्छप कथामृतं समाप्तम् ॥

अथ बामन कथामृत लिख्यते ॥

दोहा ॥

दो० चरण कमल गुरदेवके देत भूरि आनन्द।
सुमिरत संकट कटत सब मिलतमुदितनंदनन्द १ ॥
श्रीमद वल्लभ वंदिकै वरणत बामन रूप।
जासु प्रभाव न जानहीं प्रजाभूत अहिभूप २ ॥
सो० वामनपद अरविन्द दूरिकरत भवद्वन्द कहं।
सुमिरि सुकश्यपनन्द चहत रचन वर छंदकाहं ३ ॥
दो० बलि बलधर बल नाशकरि समरधीर सतवाक।
जबैपाक शासन लगे शासननाक चलाक ४ ॥

तब उत बलि असुरन महं बैठै। काकर्तव्य शोच यह पैठै ॥ सुधापान करि विक्रम भये। प्रबल देव हरि बलसों भये ५ ॥ इहीशोच शोचत गुणि आरज। बोले वचन शुक्र आचारज ॥ महायज्ञ करि हरिहि रिझावो। तबतुमराज अकंटक पावो ६ सुनिबलि हृदय बहुत हर्षाई ॥ कीनो यज्ञ जगत सुखदाई॥ कवि आचारज बलि जिजमान। कौन करै सो यज्ञ बखान ७ बिधिसों संपूरण मख कीनो। विप्रन दान अनेकन दीनो ॥ तासों दानव वरसों हालो। परम प्रसन्न भए बनमाली ८ यज्ञ विश्वजित सों छबि पूरो। निकरो सुरथ अगिनतें रूरो ॥ जाकेहय सुरपति हय ऐसे। बरणन तासुकरै कविकैसे ९ तेहि क्षणतहं आए प्रहलाद। दिए धनुष शर सह अहलाद॥ शंखदियो कविविजय स्वरूप। तेहिलै लसे दनुज कुलभूप १० ॥
दो० गुरुसों आशिरवाद लहिद्भूमि बलिविक्रम ऐन।
दनुजन दियोनिदेश यह आसु सजावहु सैन ॥

छप्पय ॥

पूरण कुम्भ निकुम्भशिखी सित केश चतुरकर। गजस्कन्ध गजशिरा गजोदर महापद्मवर ॥ कांचनाक्ष व्याघाक्ष जटी सीनाक्ष गजेन्द्र नु। धूम्र रमस भुव चंडरौद्र गोदंत महाहनु ॥ गोव्रज गोखुर विभु सज्जन क्रथ कुम्भ श्वेत शिरदान पति। शतभुज स्वस्तिक सष्टमनर वाकाश कंजसि विसूर अति १२॥ ऊर्ध्ववदनकर सहस सहसपद कृष्ण कृष्णमुख। पंकदिग्ध तनु अहर चन्द्रतापनस सरोन्मुख ॥ बेगवान अति कीर्ति समुद्र विरूप नैनहर। प्रियदरशन सुप्रसाद शैल कपीस-हयवर ॥ अनकेतु वाम निचरविकट बज्रनाभ नादी वरुण। कलसोदरवारिद चन्द्रहा प्रवर बीरमर्दन अरुण १३ सागर मथन विदर्भ गविष्ट वरिष्ट शशिध्वज। सूचीमुख अतिकंठ विकचकुशनेच महाध्वज ॥ खंजबाहु अतिक्रोध मांसभक्षक उत्काट भटु। चंडगक्ति शुशूष भूतलोन्मथन समरपटु। कपि कंठकिरीटी विकट अरु सुरयाजी निति कांपकार॥ सोमप सांसप कुष्मांड खल बल प्रलंबतन लंबवर १४॥

दो॰ मरुताशन अरुप्रियंकर एकनयन पुनिसुरड।
चलेकुलाकुल आदिलैभले असुर के झुंड १५॥

चौपाई ॥

विविधिभांति के आयुधधारे। गरजत जलद सरिसरंग कारे॥ झलकत बरसमुकुट मणिहार। लकत चले असुर सरदार १६॥ मायावान शम्ब धरसूर। धीरवीर विक्रम भरपूर ॥ महारथी जे परम गनाए। बचनत भए तबते बलआए १७॥

छप्पय ॥

चल्यो बाण बलवान बाणधनुधरि अतितरजत। रिपुशशि राहुसबाहु बाहुदश सतधरि गरजत॥ श्यामअंग रंगर्यो भटसंग अनेकन। गदापरिघ असि चर्मधरे उच्छाह भरे मन॥ मणि कनक किरीटहि शीशधरि असुर ईश ठाढ़ो भयो। इमिसैन बीचधरि जैनवर बलिनंदन राजतभयो१८॥ चलो नमासुर स्वच्छ स्वच्छ स्यन्दनजेहंगा। नीलांबर काढ़धरे

कसुनियां केशर रंगा ॥ सहसरिच्छ समुदाय लगे रथ घोंचहिं जाका। तैसीही फहरात व्योम मडंकाकपताका॥ नगमुकुट शीशगण लगत अति असुर सैनमहं लगतछबि। मनुओर घोरसागर दिशा मुदित देखियतउदित रवि ॥ चलो नमुचि असुरेश सहस बाघन के रथपैं। जे अश्वनतें चपलचलैं चौंकतरणपथपैं ॥ धनुषवाण करधरे जरे बखतर नगनाना। शारदूल करकेतु वाहिनी मधिफहराना ॥ वर वीर बरोबरके चढ़े साठ सहसरथ पथपै। धनुषवाण कर धरे बखतर नग नाना ॥ शारदूल करकेतु वाहिनी मधि फहराना। वरवीर बरोबर के चढ़े साठसहस रथपैंलसैं॥ सुरसंगजंग करिबे चहत जिन्हहिं देखि आयुधखसैं २० ॥ मायावीमय असुरचलोबढ़ि देतनगारे। अयुत सहस संग रथीगदा असिचापहि धारे ॥ व्याघ्र चर्म को सुरथलसत खगराज पताका। मणिमय खगम्रग बने चित्र कांचन के चाका ॥ रणघन समगरजत पवनगति पूरित शस्त्र समूह अति। दशशत भल्लुक जामैं लगे लखि रिपु जय आसा भगति २१ ॥ चलोपुलोमा तिमिर शैलसम उन्नत तनवर। सोहालोह सुरथरतन मयमय अतसुन्दर ॥ लागेऊंटसहस्र चपल गरजत अति भारी। सुनिकै दुशमन दूर दुरैं जेहि आयुधधारी ॥ ध्वजबीचखग्गमग तम हरत तड़िता सम जगमगकरत। संगसाठ सहस सुरथी सुभट जंग उमंगहि उर धरत २२ चलो असुर हय ग्रीवं लिए हयग्रीव असुरसंग। लाखरथीवरबने श्वेतभूषणभूषितअंग ॥ श्वेतबरण तनवसन श्वेतघोरे रथघोरे। श्वेतमुकुट शिरलसैं श्वेतकुण्डल दुहुं-ओरे ॥ सिरश्वेतचमरदुहुं दिशिढुलैं अतिप्रताप दलमैंछयो। रणलरन हेत सब सुरनसों दैडंका चलतोभयो २३ चलेवीर प्रहलाद करन अहलाद सवन उर। सकल शास्त्र संपन्न नीतिकी राशि धरमधुर ॥ ताल केतु सुविशाल लसतकांचन रथभारी। कोटिदैत्य संगबने अनेकनि आयुध धारी ॥ मणिमोर्छल परवा चमर बहुशोभ फिरावहिं असुरगन।

इमि चले भलीविधिखलभले जिन्हहिं देखिसुर सडरमन २४ चलोतनै अनुह्राद हिरण्य कशिपु सुतमीरा। लीने संग तुरंग कोटि सुरपिनकी भीरा॥ गदाभुशुण्डी परिघखग्ग मुगदर कहंधारे। जगमगात आभरण गातकारे महंभारे। रथचलत हलत वसुधासकल वसुधा अरिको उर करत॥ वर गरजि गरजि टंकारि धनु दशहु दिशा महं धुनि भरत २५ संबर स्यंदन बैठिचलो बढ़िकाल समाना। लोहित लोचन लोललसैं करमैं धनुवाना॥ तीनलाख रणधोररथी रचहिं चहुं ओरा। क्रौंचकेतु फहरात चलतमन तेंबढ़िघोरा॥ वरगरजतअतिजीमूत रचनसमर महा मजबूततन। अतिप्रबल असुर पुरहूत रणचलो करन पुरहूत मन२६ चलोविरोचनदैत्य अग्नि समकरत प्रकाशा। गजध्वज सिर फहराय बातवसचारहु आसा॥ रतन जड़ोमनिमुरथ कोटिभट सोहहिं संगा। बाजहिं भेरीशंख पटह दुंदुभि बहुरंगा॥ बरनाग तुरगस्यन्दन सुभटआयुध बहुधारे लसैं। विकराल समरहित तालदै कामर कसैं हर्षित हसैं २७ चलो सदंभकुजंभदनुज संगस्यंदन भारे। प्रासशरासन शक्तिगदा असि चरमहिं धारे॥ तालकेतुफहरात छचचामी करकेरो। कज्जलगिरिसों अङ्गलसो कोसनकोघेरो॥ मणिहीरालीलालालके भूषण तनराजहिं घने। छविधाम शुभगनग श्याम पें औषधि से जगमग बने २८॥ असिलोमा भटचले भयावनरूप बनाये। सकट चक्र समनैन गुफा सम आन नवाये॥ महा सरपसी जीह बलाहक सोरंगकारो। पर्वत बिटप त्रिशूल आदि आयुध कर धारो॥ रद खड़े बड़े भीषम भयद तैसेइ सहसन संगभट। पर काटक काटन काटन करत विकट ठटन धरसारु रट २९॥ चलो इत्य बलसींव वंधुबल कोबल संगा। अरुण बदनतन श्याम हरित कच सित दरङ्गा॥ चक्र केतु हय सहस युक्त रथपैं अति राजै। कनकमाल उरमेघ मध्य जिमि दामिनि छाजै॥ घनसिंहनाद कहं करत रण धरत विविधि आयुधप्रबल।

इमि शोभित सेना महं भयो लिये रथीगण दुमखल ३० ॥ एकचक्र भट चलो तबै रवि चक्र समाना। विष्णु चक्र सो दुसह सुरथ ऊपर दरशाना ॥ असी सहस संग रथी चित्र योधा बलशाली। महाउदररणधीर वीरवर कञ्चन माली ॥ मद मत्त हस्त आयुध धरे कर्त्त शत्रुदलपैं करे। अति मस्त मैन सम सांवरे भट सोहैं भटता भरे ३१ ॥ चलो राहु सहबाहु पीत भूषण अरु अंबर। शत आनन शत उदर पुच्छमि पग मस्तक अंबर। लोहकवच तनसोह कनक को मुकुट जटित नग। संग कज्जल अङ्ग कोटि सुभट उन्नत मानहुं नग। जब सुरथराजि गरजत भयो थरथर थर थरकी धरा। सुनिसो सम सुरदल डरभरा समरहित सोमहिं धरा ३२ विप्र चित्त भट चलो चित्र विधि सम छबिधारी। हर वर पायें आपु वरद दानव वर भारी ॥ लिये सकल परिवार वेद ध्वनि चारहु ओरा। श्वेत बसन आभरण साज स्यंदन अरु घोरा। रथ हंस केतु अति फर हरै हंस सरिस द्युति रहीलसि। सित छत्र बिराजत तन जिमितुहिन शैलपर उदित शशि ३३ ॥ केशी दानव चलो देह द्युति अंबद ऐसी। चंचल नैन विशाल लाल पुनि माल सुतैसी ॥ शत लोचन शतबाहु धरे शतभूषण भारे। ऊंट केतु फहरात लगे रथ भैंसा कारे। घनघुंघुरूघंटा बजुबजैं साथरथी बावन सहस। इमि चलोभलो तित लरन हित धरे उचित चित बीर रस ३४ ॥ वृषपर्वा बढ़ि चलो चारु रथ कनक खचित पैं। सारस हंस मयूर रतन मय सुघर रचित पैं ॥ लीने लाखन भीर बीर कों तीर धनुष कर। मुकुट महा द्युति शीश धरे भटईश बली बर ॥ निज ताल देत उत्ताल अति कारो मेघ द्युतिलालदृग। सुरदल ऊपर चलतो भयो मनहुं व्यगन पर नाथ व्रग ३५ चलो प्रबल खल दैत्य चारु रथ चढ़ि बल छायो। पहिरे कुण्डल क्रीट भुजन बाजू सरसायो ॥ पुनि पुनि लेत हमाल गरजि कै आनन पोंछै। पैठत रिपु दलबीच मलो निज ऐंठतमोछै ॥

भेरीतुरही धरदुंदुभी चहुं ओर बाजति भई। रण रीति नीति अरु प्रीति सब सुरसंग राजतिभई ३६॥ चलेकली बलिराज साज सो कौन कहै कवि। कनक रत्न के कलश देखि शशि दुरैं मुरैं रवि॥ घण्टा घुंघुरू घने करैं टण्टा अति भारे। घेरि रहे सब दैत्यवीर आयुध धरकारे॥ अपसिरा बाजि शिरसिवि कुपथ बिकच मतंग शताजय। दशसुभट निकुंभ दुरायसह रहहि राजहि रण समय ३७॥ कनकमयो मय रचित सुरथ सब काम जड़ाये। सारसहंस मयूर कीर राजहिं छबिछाये॥ गजमुक्ता झालरनि लसत कूबर मणिकेरो। चक्र चार अतिचौक शब्द घन सरिस बड़ेरो॥ सम घोरे घोरे वर्ण वरजोरे घोरे उमिरके। सब भूषणभूषित लसहिं गत दूषन नाशन तिमिरके ३८॥ विजयमाल कहं धरैं गरे मोतिनकी माला। माथे कनककिरीट कौन छबि कहै बिशाला॥ धारे आयुध विविध शक्ति शर असनि समाना। भिण्डिपाल अरु मुशल रासन शूल महाना॥ शिर शुभग छत्र चामर ढुरहिं सुरकुल विजन सुहावने। तहं अस्तुति करहिं अनेक विधि याचकगण मनभावने ३९॥ चलत असुरदल बजें शङ्ख दुंदुभि सहनाई। धरतधीर गण चरण सकल धरणी थहराई॥ विप्रन दीनो विजय पत्र आशीष सोहाई। तिनपैं बसिघन सरिस सुधन बरषाबरषाई॥ जेयाचक बंदी सूतगण संग गानकरते चले। तिन सब कहं तहं देतेभये मणिगण आभूषण भले ४०॥

दो० इहि बिधान चलती भई दानव सैना घोर।
प्रलय पयोनिधि समउमड़ि सुरपुरपर सब ओर ४१॥

चैापाई॥

सुनिकै असुरसैन करसाज। सुरन सजावत भे सुरराज॥
गुह्यक चारण स्वयंप्रकाश। यक्षरक्ष अहिसहित उलास ४२॥
किन्नर सिद्ध गंधरव शैल। सागर सकल चले रणगैल॥
मंगल बुध गुरुमंद जयंत। रणहित चलेभले बुधिवन्त ४३॥
बरे बरे बलभरे सुरेश। चले पृथक काढ़ि करि भट भेश॥

एकएक बलवीर्थ निधान। बरनैसो असकौन जहान ४४ ॥

छप्पय ॥

चले धनद बलधाम गदा सोहत कर भारी। बन्यो जड़ाऊ सुरथ सहस हययुत मनचारी ॥ यक्ष रक्ष बैताल करोरन संग बलधारी। गदा परिघ असि शूल हाथलीने रणकारी ॥ बर श्वेतछत्र शिर सोहई जिहि लखिउडपति मोहई। रथ ध्वजावनी कांचनमई निरखत दामिनि द्युति हुई ४५ ॥ चले प्रेतपति हाथदण्ड ब्रह्मण्ड बिनाशन। अरुण नयनतन उच्च सकल दिशि भरत प्रकाशन ॥ पितृदेव गण व्याधि बिबिधिबिधिलीने संगा। मृत्युपासजै पासधरी अति याचत जंगा ॥ बर रत्नमाल सोहति गरेशीशमुकुट बहुनग जरे। नवनीलबसन कहुं तनधरे लरन हेत रणमनकै ४६ ॥ चले बरुणबलसींव बैठि सितस्यंदन भारी। श्वेत छत्र शिर लसतकेतु दरशत रुचिकारी ॥ संगजंगहितलिये जादससुदाय भुजंगन। रचहिं नाथहि घेरि खरेते भरे उमंगन ॥ इमिसोहे सहितउल्लास चितपास हस्त अरि नाश हित। जय जय बोलहिं निरजर अमित ढुरत चमर दुहुं ओर सित ४७ ॥ चले प्रभाकर परम प्रभाकर बिक्रम आकर। सुन्दर स्यंदन बैठि कहिय किमि बरणन ताकर ॥ शंखचक्र कहंधरे भरे संगरके चायन। संगसप्त ऋषि वेदपढ़हिं सुर विजय परायन ॥ सुरसरसिज गणकहं दिवसमणि दानव तमपर दिवस मणि। इमिभये सुशोभित दिवस मणि सौंह सैनलखि दिवस मणि ४८ ॥ चले निशाकर प्रबल गुणाकर अति छबिछाजत। सुरङ्ग कुरङ्गको सुरथतुरङ्ग लखिकैजिहि लाजत। कर सोहत गुरुगदा करत तम दूरदिशनको। आत पत्रशिर श्वेत बन्यो निशि लखिके मखिको। उड़गन कोटिन भट साथ मैं आयुध धारे हाथ मैं। द्विज पढ़हिं विजय श्रुति गाथ मैं सुरुचि तिलक दै माथ मैं ४९ बिबि अश्वनी कुमार मार मन हरण चलेरन। सुन्दर सुरथ सवार क्रिये सिंगार सुभग तन॥ अंबुजकी उरमाल हार मणि के सुढार

धरि। संग औषधीअपार नारिजे छारकरहिं अरि॥ शिर बर किरीट कलगीलगी चहुँओर दुनि जगमगी। कर असि छबिलखि तड़िताभगी सेन प्रभुकी डरपगी ५०॥ चले आठ वसुभले बैठिस्यंदन कांचनके। लागेजामें तुरङ्गसुरङ्ग आभरण रतनके॥ लाखन सोहैंसाथबीर नाशन रिपुगणके॥ कानन कुण्डल खरे लसैं द्युतिभरे। नभ धुजा सोहावनि फरहरै निजसैना की डरहरै। अरि धीरज दृगगोचर हरै शोभा सबमनबरहरै ५१॥ चलेइकादश रुद्रश्वेत वृषभनपर चढ़ि-चढ़ि। धूम्र बरण दृग अरुण हिये अतिही रिस मढ़िमढ़ि। कर त्रिशूल कहँ धरे धरक्क मारक्क वह पढ़ि पढ़ि। वृष धुज सोहत भये सैन महँ रण हित बढ़ि बढ़ि॥ बरजटा जूट शिर छाजई सुमन बीच बिच राजई। संग प्रबल प्रेत दल गाजई सुर महं शोभा साजई ५२। विश्वेदेवा चले सकल रवि सरिस प्रकासा। कमल माल उर अमल लसैं अलिगण चहुँपासा॥ बैडूरजके सुरथसजेध्वज लगेअकाशा। तेजराशि बलराशि गरजि पूरत सब आशा॥ आयुधगण त्रिबिधि प्रकारके शशि रवि पबि अनुहारके। तेराखेसुरथ संवार के जयद अमर सरदार के ५३॥ चले साध्य गण भरत दशहु दिशि परम प्रकाशन। शत्र सहित भुजआठ समर पर काठ हुतासन॥ बीरासन आसीन टंकारत पीन शरासन। कोटिन गन्धर्ब सिद्ध साथ महँ भरे हुला-सन॥ ध्वनि शंखपूरि दशदिशि भरत द्युतितें जग जग मग करत। रथ चलत धरणि धर घर थरत असुर सकल उर महंडरत ५४॥ चलेमरुतगण मेघसरिस अंग गरजत तैसे। सुभल शक्ति असि गदा परिघ धरि धरि रथ लैसे॥ तिनके तनके कनक रतनके भूषणकैसे। मेरु शिखरपर लसत अने-कन उडुगण जैसे॥ अति गरजि गरजि कै महिभरत अति भय अरिगण महिंभरत। सुरहिये मोद धनुगहि भरतउर प्रमोद रण चहि भरत ५५॥ रण गुरुकरमा चल्यो युद्धमेंशुभ विश्वकरमा। कांचनबरमा सुभटथोरबर मांगतभरमा॥ गर

माणिक मणिमाल नीलपट सम नाक़रमा ॥ कनक सुरथ आसीन लिये करमें असिचरमा। दिनकर समद्युति अति जग मग तरण उमंग मन मैं पगत ॥ धनु ध्वनि सुनि सुनि सब रिपु भगत बर प्रताप पुरयो जगत ५६ ॥ चले अग्नि बलसींव सात सोहत भुजभारे। द्वैायबदनपद तीनि तीनि लोचन रतनारे ॥ धूमकेतु फहरात शीश रथ के छ्य कारे। पीलेकेश विशेष सुनीले अंबरधारे॥ शिर क्रीटमुकुट सोहत शुभग मग डग उगजग मग तनग। अति भस्यो तेज तें सकल जग मनमहं अति रणकी उमग ५७ ॥ चले इंद्र सुर राग साज बरणै असकोकवि। सोहत असनीद्वैाय गदा मुद्गर कृपाणपवि॥ व्याघ्र चर्मको चर्म बर्म जग मगतकोटि रवि। हीरा लीला ललित लसुनियां धरहिं महा छवि ॥ दिशि घेरि रहे दिशिपालगण आयुध धरे कारालतन। सुर शत्रुवंश के कालरण शोभासींव विशालपन ५८ ॥ आत पत्र सिररचत चवत अमृत सुखदाई। ध्वजमें गजवर सजत छजत कलसा अधिकाई ॥ हेम जालतें खचित जात नधि मणि मणि भाई। करत शोर अति घोर मन केस मनाई ॥ सब ताजी बाजी छविभरे कर लगाम मातलिधरे। बलि शत्रुसैन दिशि रुखकरे चले शक्रदल मैं हरे ५९ ॥ शीशमुकुट मणि जटित देखिलाजत दिननायक। कुण्डल कानन लसतसदा सुरगण सुखदायक॥ भूषणबने अनेक एकतें एक सोहायक। विजय तिलक शिर दिये विजय जगकरिबे लायक ॥ दुहुं ओर ढुरत सुरकुल चंवर सूरसुखो सित विजनवर। जीवा-दिक मुनिगण बेद धरदेत अशीश अनन्द धर ६० ॥ बाजत शंखनिशान भेरिझालर सहनाई। जय जयध्वनि दशदिशनि होत छवि बरणि न जाई ॥ बन्दी मागध सूत बखानहिं अस्तुति गाई। तिनकहं दीन्हे दानघने सुखभरि सुरराई ॥ संगमेघ पच्छ किन्नर सकल घेरि रहे रथकहं प्रबल। बर बरषत मोदक फूल फल अक्षत दुर्बामंच जल ६१ ॥

दे१० इमि सुर असुर समूह चढ़ि क्रोधभरे तेहि काल।

लालनाम लोचनकिये कीनो युद्ध कराल ६२ ॥

चौपाई ॥

नाना शस्त्र अस्त्र दुहंदिशि सों। मारन घोर लगे भटि रिसि सों ॥ गदा असनि असि चक्र कृपाण। भिंडिपाल तोमर धनुबाण ६३ ॥ गहेवीर विधिकी उतकरषा। वर्षहिं वर बारिदकी वरषा ॥ तुरङ्ग मतंग सुभट रथ नाना। करहिं परस्पर अतिघमसाना ६४ ॥ दानव देव दुहूंदिशि सों बढ़ि। अभिरे अभैसभै रिसिसों मढ़ि ॥ तिहि क्षण उभै सैनके भटसों। भोरण इन्द्र मारु धरु रटसों ६५ ॥ भिरेउ बाणतें पंचम मारुत। भट सावित्रनाम बढ़िकै द्रुत ॥ बल दानव भुववसुसों बढ़िकै। भिरेवेगसों इतलखु पढ़िकै ६६ ॥ धरवसु सों नमुची शर छांड़त। अभिरे अमरसैन भय मांड़त ॥ मयतें विशुकरमा रणधीर। भिरो महामायावी बीर ६७ ॥ भिस्यौ वायु सों असुर पुलोम। प्रकट करत निज तनको लोम ॥ हयग्रीव दानव बलछायो। पूषाकेसंग द्वंदमचायो ६८ ॥ भगसों संबर संगरकरई। आयुधविविध भांति परिहरई ॥ शरभ सलभ द्वैदानव भारे। भिरे चन्द्र तें रणमतवारे ६९ ॥ विष्वकसेन साध्यके साथ। भिरीविरोचन दानव नाथ ॥ असुर कुजंभ अंशकेसंग। भिरिकै कीन्हो अभुद्दत जंग ७० ॥ असिलोमा मारुत सों भिरिकै। श्रम बिन विक्रम कीनो थिरिकै ॥ वृत्र संग अश्विनीकुमार। भिरिकै करत भये अतिमार ७१ ॥ एकचक्र चक्रहि कर धरिकै। भिस्यौ साध्यतें अतिहि अकरिकै ॥ बलबलवान भिस्यौ मनुहाथ। भटमग व्याध रुद्रकेसाथ ७२ ॥ शतसिर राहु सैनसों कढ़िकै। भिस्यौ अजैकपादसों बढ़िकै ॥ केशी धूम्रनैन कहंघेरी। भिरतभयो बजबावत भेरी ७३ ॥ वृषपर्वा निकुम्भहि घेरी। कीनोयुद्ध मारु भरुटेरी ॥ भट प्रह्लाद कालके संग। जंगकीन्ह उरपूरिउमंग ७४ ॥ अनुह्राद धन पति रण करहीं। धनुको शब्ददिशन महं भरहीं ॥ वरुण विप्रचित्ती बलशाली। भरे लोल रथ कांचन माली ७५ ॥

बलि असुरेश शक्र समरेश। झरि कीन्हो शर पूरित देश॥ इमि सुर असुर परस्पर भारे। सुभट भिरे घेरि अर्द्दन हारे ७६॥

दो० उदित सकल सूरज भये होत कठिन पविपात।
प्रलयकाल सो कालतहं भयो भयद दरशात ७७॥

सो० प्रगट वज्रत उतपात धूम उठे सुरि गिरिन तें।
खर खरात कटि बात बालु वरषत व्योममें ७८॥
सबको मन अकुलात थर थरात धरती सुडर।
दिन में उल्कापात दिशा दाह दरशात नित ७९॥

चौपाई॥

सुर असुरन कर संगर भारी। देखत व्योमबीच सुख धारी॥ स्यन्दनसहस प्रभूकोभारी। सुबरणबिरचित अति द्युतिधारी ८०॥ जगमगात नगसर्वदिशिताके। तैसेइ सहस अश्ववर बांके॥ गजमुक्ताकी झालरि सोहै। हंसकेतु शशि को छबि मोहै ८१॥ श्वेतछत्र सिर अतिसरसावै। घूमत सुधा फुहीबरसावै॥ सुरछम चंवरढुरै दुऊंओर। दिशन प्रताप प्रकाशनघोर ८२॥ चारमुकुट शिरचारु सोहाता। इमिदेखत रणव्योमबिधाता॥ चारऊवेद मूर्त्तधरसङ्ग। सिद्ध महर्षि लखहिं रणरङ्ग ८३॥ भृगु मरीचि नारद अंगिरा। पुलहपुलस्तिलिये संगगिरा॥ षटयोगेश्वर तेजनिधान। बैखानस शिखियोनि सुजान ८४॥ श्रुति उपनिषद सकल मखदेव। बालखिल्यदेखहिं रणभेव॥ ए सब सेवहिं विधि कहं भारे। ति करक्षुहिं वेदबिधिधारे ८५॥ सब उर-चाउ समर करधारि। देखहिं देवअसुरकीमारि॥ सैपरि-वारसाथ इमिज्ञाता। नभमहं शोभित भयेबिधाता ८६॥

दो० चारिवेद चारिऊ दिशा चारिबदन छबिरासि।
जगनिवास सङ्कर लखत प्रजानाश सुदनासि ८७॥

चौपाई॥

दुऊंदलसों रणमाच्यो भारी। तुमुलशब्द सबदिशि भय-कारी॥ गोमुख डम्बर झर्झरभेरी। मुरजपटह दुन्दुभिकहं

झोरी ८८ ॥ लरन लगे सिगरे रणधीर । रणमख बिरचेउ दानव बीर ॥ नेताभये तासु प्रह्लाद । होता नमुचिभयो अह्लाद ८९ ॥ भये अध्वरज बीर बिरोचन । उपकाल्पक भो हयबली रण ॥ यष्टाबाण शत्रु भयदाता । मयतहं होत भयो उदगाता ९० ॥ ऐन्द्रपाशु पत अस्त्रचलैया । अनुह्लाद भो मंत्र पढ़ैया ॥ वल ब्रह्मा दानव कुलनाहा । करत समर महं देवन स्वाहा ९१ ॥ बैर समिधितें भट कृतबाहु । ज्वलितबने रथबेदीमांहु ॥ भेरी झालर शंखशुभाऊ । करहिं यज्ञमहिं पूरित राऊ ९२ ॥ बली पुलोमा बल तेहि बार । स्रुवा शरासन शर घृत धार ॥ तरपत समर यज्ञ आरंभा । रथ के केतुलसे मखखंभा ९३ ॥ भल्ल भले कुशसे छबिछाये । तोमरवर घट सोम भराये ॥ पुरो डासभट गण के शिर-तहिं । द्विज कांकादिक द्विजगण जेवहिं ९४ ॥ जंभ कुजंभ राऊ असिलोमा । केशी हयग्रीव बलहोमा ॥ बिप्रचित्ति ये बीर बड़ेरे । भेसदस्य सखभंगर केरे ९५ ॥ अस्थानिक कार्महिं तेहि पर्बी । करतो भयो बीर दृषपर्वा ॥ दीक्षित बलिसेना बिब ताकी । संग उमंग भरी अति बांकी ९६ ॥ कालनेमि भट कांचन माली । मख दक्षिणा भयो बलशाली ॥ शिक्षक संवर धीर धुरीन । निरखेउ समरसुर कालीन ९७ ॥ कारि रण यज्ञ असुर सरदार । चहत बिजय फलबाहन उदार ॥ इमिते दानवबीर बड़ेरे । पीवहिं बधिर अमरगण केरे ९८ ॥ समर सूरदानव अति कारे । भारे रण गर्जहिं बिकरारे ॥ घन समतनु धनु तड़ित उज्यारा । वर्षहिं महा बाण की धारा ९९ ॥

दो० प्रास परिघ असि असनि धनु मुद्गर परशु प्रहार ।
शूल परश्वध तरुगद । दुंदुंदिधि करहिं प्रहार १०० ॥

चौपाई ॥

हयहिंसन बारन चिक्कार । तालशब्द दानव ललकार ॥ शक्ति शूल तन त्राण खनझनि । स्यंदन घण्टा झांझ झनझनि १०१ ॥ शङ्खादिक बाजनकी गाजनि । धनुटंकारशत्रु

भयसाजनि ॥ महा शब्दते पूरयो लोक। सबके हृदय विवर्द्धन शोक १०२ ॥ दानव बपु महं भूषण भारे। तड़ितधरे जिमि जलधर कारे ॥ शक्तिपंक्ति दुहुं दिशिते छूटहिं। बज्र समान प्राण पर लूटहिं १०३ ॥ फेरि फेरि रथ घेरि घेरि कै। हेरि हेरि रिपु टेरि टेरिकै ॥ भोरे भयंकर भेरि भेरि कौ। भिरे बीर दिशि द्युति बखेरिकै १०४ ॥ झपटि झपटि हटि चपटि चपटिकै। दपटि दपटि डटि लपटिलपटिकै ॥ गर्जि गर्जि अति तर्जि तर्जि कै। लरहिं बीर छल बर्जि बर्जि कै १०५ ॥ तमकि तमकि रण चमकि चमकि कै। ठमकि ठमकि बढ़ि जमकि जमकिकै ॥ तरपि तरपि पुनि सरपि सरपिकै। लसे रुधिर महि तरपि तरपिकै १०६ ॥ मरदि मरदि अरि अरदि अरदि कै। नाहरसे रण नरदि नरदि कै ॥ भेदि भेदि तन छेदि छेदि कै। दीने दुशमन खेदि खेदि कै १०७ ॥ डांटि डांटि रिसि ठाटि ठाटि कै। काटि काटि महि दीन्ह पाटि कै ॥ हेलि हेलि रण फेलि फेलिकै। ठेलि ठेलि रथ पेलि पेलि कै १०८ ॥ केलि केलि धनु मेलि मेलि कै। रहे बीर शर रेलि रेलि कै ॥ बली बीर दानवअरु देवा। करहिंसमरचाहत जयमेवा १०९॥

दो० दुहुं दिशन के बाण सों पूरि गयो असमान।
मारु मारु धरु मारु ध्वनि पूरी सबके कान ११० ॥

कवित्त ॥

जात महिमसकि धसकि महि धुरजात कूरम खसकि जात कोलकी कसकि जात। जग थहरात रवि रथ घहरात पविपात दरशात औ समुद्र सात हहरात ॥ चण्ड अति बात महि मण्डल अखण्ड मण्ड शब्दना अमात काल प्रलै कोह्न सरमात। मूंदि मूंदि मनरण कूदि कूदि काल केसे सूदि सूदि सुरन असुर हिय हरषात १११ ॥

दो० तहं सावित्रहि देखि कै बधन हेत भटवान।
बाणनतें छादित कियो स्यन्दन तासु महान ११२ ॥

चौपाई ॥

ज्वलन ज्वलत जिमि ज्वालामाल। तिमिसो भयो समर विकराल ॥ तब साविच मरुत बलधाम। लीनी शक्ति बाण बध काम ११३ ॥ तड़िता सम मारी भरि जोर। तिमि पविशक्रश्यामगिरिओर ॥ सो लखि बाणबाण निजमारि। करि द्वै टूक दई मग डारि ११४ ॥ शक्तिहि व्यर्थ देखि सुर सोई। लीनो खड्ग क्रोध बस होई ॥ चंद्रछंते दुचंद बर परमा। निसितधार बिरच्यौ विश्वकरमा ११५ ॥ इतनेइके अंतर मैं बान। मारि मारि क्षुरधार महान ॥ भरिदीनो सब स्यंदनतासु। नेकहुनाहिं रह्या अवकासु ११६ ॥ धनुष पांच शत चमकत भारी। जिमि अति घन बज्र बिद्युत धारी ॥ तब भयछायचलाय सुरथकों। गोसाविच पाछिलें पथकों ११७ ॥ गरज्यो सुत तब दानव बरको। अमरनकर उर धरधर धरको ॥ बरषत विपुल बाण की धार। चलेउ इन्द्र पहं भूप कुमार ११८ ॥

दो० भुवबसु ऊपर कोप भरि बल बल निधि तिहिकाल।
बधन हेत अति बेग सों मारी गदा कराल ११९ ॥

सो० चामीकर को वर्म चर भयो स्यंदन सहित।
भस्यौ हृदयमहंभर्म बसुके असु व्याकुल भये १२० ॥

तोटक ॥

वसु सोतब धीरज धारिमन। अतितीक्ष्ण भयंकर मारि रनै ॥ धसिभल्ल चियल्ल प्रहारि सरै। रथ छाय दियो सलकारिपरै १२१ ॥ लखिसो बलवीरि रिसायतदा। गहि बज्र समान महान गदा ॥ धसि देवन मैं अति कोपठयो। यम पैं बहु बीरन को पठयो १२२ ॥ हय बारन स्यंदन बीरहतो। सुरधीरज भोनत बीरहतो ॥ भट भागत भे रण तेंसगरे। लखिकाल समान करालडरे १२३ ॥ बसुसोधरि चापहितैानघरी। घनसीबलपैं शरदृष्टिकरी। तिहिधारत सो.तनपै सिगिरी। जिमिपावसदृष्टि महान गिरी १२४ रण धावत दानव काल जिमी। हलती तिहि काल

विशालजिमी ॥ जिमिबारन नासतखेत महा। पुनिभासत ज्यौ घन मैं तमहा १२५ ॥ तिमि पीसत अचुन रोसमयो यम सो बल सो रण मैं उदयो ॥ सुरभागहिं आरत नाद करी । जिमि देखि हरी बनकी बकरी १२६ ॥

दो० आप अनिल तिहि कालबढ़ि दोऊ मेघसमान ।
बलसों बलसो काढ़िनए बलपैं बरषत बान १२७ ॥

चौपाई ॥

धनु कहं धारितनै दनुजेश । काटेतिनको बाण विशेष ॥ तब भुव भुव रण-कारण विचारि । भिरे सबेग बलहि खल-कारि १२८ ॥ ते दोऊ सुर असुर महान । अद्भुत विधितें बरषे बान ॥ सिंहसिंह जिमि बारन बारन । तिमि रण करहिं घात पर बारन १२९ ॥ फेरिफेरि रथ भेरत भेरी । लरतेभए मारुधरुटेरी ॥ आपुन डारहिं परशर बारहिं ॥ धनु टंकारहिं सैना मारहिं १३० ॥ घात बिदारहिं नाम पुकारहिं । अरिहि प्रचारहिं बधन बिचारहिं ॥ पर बल टारहिं निज विस्तारहिं । लरहिं दोऊ इमि कोऊ न हारहिं १३१ ॥ लरिधनु असिचरमनतें बीर । कुस्ती करन लगे रणधीर ॥ मल्ल समान क्रोध कहं धरि धरि । लरे लरनकी बिधि सबकरि करि १३२ ॥ दोय घरी लखिलबल घनतें । भगो आसु वसु असुलै रणतें ॥ तबतेहि जीतिदनुज रथ राजी । चल्यो इंद्र दिशि जम समगाजी १३३ ॥

दो० तिमि नमुची धरतें अतिहि होत भई धरमार ।
दोऊ अतिहि पराक्रमी अमर असुर सरदार १३४ ॥

तोमर ॥

दोउनैन को करिलाल । लखते खरेजिमि काल ॥ पुनि ठोंकि ताल उताल । विरच्यौं सुयुद्ध कराल १३५ ॥ धर देैव सो तिहिकाल । परपैंतणी शरमाल ॥ तवबाणते सम व्याल । बढ़िकै चले मन चाल १३६ ॥ नमुची रथै इमि छाइ । गरजो हिये हरषाइ ॥ लखिसो निशाचर राइ । विहसो कमान बजाइ १३७ ॥ बसुवाण आसुहि काटि ।

नव आपु मारेउ डाटि ॥ सहिताहि सोरिसि ठाटि । पर पैंदिये भरपाटि १३८ ॥ नमुचीतबै बलवान । परके इथा किय बान ॥ रथ फेरि फेरि सुजान । करते भये घमसान ॥ १३९ बाजने बजाइ बजाइ । दलकों सजाइ सजाइ ॥ सुरथै चलाइ चलाइ । दिशिमैं दिये भरछाइ १४० ॥ धरियो पुकारि पुकारि । बरछी प्रहारि प्रहारि ॥ रिपुकों विदारि विदारि । अभिरे प्रचारि प्रचारि १४१ ॥ रथकों मिलाइ मिलाइ । धनुकों घुमाइ घुमाइ ॥ बलकों लखाइ लखाइ । भरके तबै समुदाइ १४२ ॥

दो० इमि सम सङ्गर दुहुन का देखहिं दुहुं दलबीर ।
दुहुनसराहैं बहुतविधि दुहुंदिशिकेरणधीर १४३ ॥

चौपाई ॥

दोउदिशि भरछावहिं दोऊ । जिन दोऊ सम और न कोऊ ॥ दोउ बाण बाण पैमारैं । दोउ काटि ताहि महि डारैं १४४ ॥ दोउ समर भूमिमैं घूमैं । दोउ वारनके सम झूमैं ॥ दोउअस्त्रदुहुनके काटैं । दोउवीर दुहुनकों डाटैं ॥ १४५ दोउमारि भटन महिपाटैं । दोउ अतुल पराक्रम ठाटैं ॥ दोउभली भांति रणसीखे । दोउ दोउनके बधईखे ॥ १४६ इमि जरि नमुचि वीर सतवारो । महा चक्र धर ऊपर मारो ॥ सूरसरिस बरराशि प्रभाका । गिस्योजस्यो रथ सहित पताका १४७ ॥ टूटो कवच जरेतन अंबर । भभरि सकर धर भाग्यो अंबर ॥ इमि बसुसो दानव जय लहिकै । विबुधन बधन लग्यो धनु गहिकै १४८ ॥

दो० तिमि मय विशुकरमा दोउ अद्भुतरण विधिकीन ।
दुर्दिन दुसह दुनीह से बाणनको करिदीन १४९ ॥

शुद्ध तोमर ॥

विशु कर्म विक्रम धामको । धनुचारु चित्रित कामको ॥ तजिवे लग्यो वर वाणको । हरते सुजे पर प्राणको १५० ॥ मय आप चाप टंकारिकै । सब वाण ता पर वारिकै ॥ निजबाण कोटिन मारिकै । गरजत्त भोलबकारिकै १५१ ॥

तबदेवसों अति कोपिकै। कर शक्ति लोनि सुचोपिकै॥ पविसी महाछविसो धरै। मगमध्यमैं तमको हरै १५२॥ परपैं तजी हियहेरिकै। नहिंतूबचै यह टेरिकै॥ तबमात बाण निकारिकै। धनु केश ऊपर धारिकै १५३॥ मयअट्टहास प्रचण्डकैं। तिहिडारि दीनि दुखण्डकैं॥ दुनिकाटि विक्रम ठाटिकै। मय विश्वकर्महिं डाटिकै १५४॥ शर घोर त्यागेउ जोरसों। सुरपैंबली मघश्रोरसों॥ शरतेक्षुधा धर व्यालसे। बढ़िकै चलेरण कालसे १५५॥

दो० देवतबै अपने विशिख तिनके सधिमैं मारि।
काटि काटिकै बीचहीदीने महिमैं डारि १५६॥

चौपाई॥

दोउ भिरे बीर विधि धरिधरि। दुसह महान बाण भारि करिकरि॥ मण्डल सरिस समर महि चरिचरि रथ बढ़ाइ अरिसन्मुख अरि अरि १५७॥ सुर असुरन के प्राणन हरिहरि। मृतक समूह दिये महि भरिभरि॥ लखि दुमि रण दुहुंदल भट डरि डरि। गेदुहुंके सन्मुखतें टरिटरि १५८॥ तबमय धारिगदा अतिभारी। कनकरचित मणि खचित प्रहारी॥ तबसों जाइधुरी कहंतोरि। घोरा पठै दिये यम ओरि १५९॥ गरजि बहुरि दानव तिहि काल। बरष्यौ व्यालसरिस शरजाल॥ एकबाणतें मरिसजबूत। संगरमहिं महंसूतो सूत१६०॥ काटिएक शरतेंपुनि केतु। दलमहं छाइ दियो शरसेतु॥ लखिकै सूत हयनसह नष्टा। खरे भये महि धनुधरि त्वष्टा १६१॥

दो० रिपुहिविरथ करिदनुजरिपु विक्रम मय मय बीर।
कालसरिस गर्जत भयो त्यागत तीक्षण तीर१६२॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

पुलोमा तबैयुद्ध में बीर्य तोमा। लरयोगर्जतो ज्योंमहा मेघ व्योमा॥ बलीवायुके संगदानौ अरुझो। लरै कालसो कालसो शत्रुसूझो १६३॥ महो सर्पसे दर्पतें बाणअर्पै। लड़ धारतें भूमि को भूमितपैं॥ बड़े बीरकोबेगसों आलु

अर्दें । कपर्दी बिमर्दें यथा हांकि बर्दें १६४ ॥ दसौं ओर नाराच नागेंद्र कैसे । बली देव की सैन मैं ते प्रबेसे ॥ डरै देव ताके निजे ओर ताके । भुलैं धीर ताके जिन्हौं के पताके १६५ ॥ दयो छायकै वायुको जानभारी । घने बाण को देत भूपाल डारी ॥ भर्यौ पत्र तें शत्रुके आत पचै । सबैयों गिन्यो ना बचै वायु श्रचै १६६ ॥ महाभेरि कों भेरिकै टेरि नामैं । रथै फेरिकै हेरिकै वीर्य धामैं ॥ दिये छायकै बाण भारे करारे । तजैं ज्वाला माला यथा नाग कारे १६७ ॥

दो० तबै वायु निज आयुहित मारतभो नववान ।
ताकहं टणसम गुणिभयो गर्जत असुरमहान १६८॥

चौपाई ॥

वायुतबैउत्तम जब साधी । कीही प्रकट भयङ्करआंधी ॥ परके शर उड़ाय पणधारो । बीस बाण दानव कहंमारो । १६९ ॥ तबदस पवन साधुकहि पवनहिं । गरजे खलनसके सहि तबनहिं ॥ भट पौलोम समर महंकूरे । धनुधरिधरि भगरे रिसि पूरे १७० ॥ पवनहिं छाय दयो बाणनतैं । परम बीर जय की ठानन तैं ॥ सात रथी सातऊ दिशि घेरी । बरषे विशिखन बांचत टेरी १७१ ॥ तबै पवन गिरि महा उखारी । तिनके सिरपैं दीनो डारी ॥ ते तब सब चूरण तन भए । पवन सबै लखि आनंद भए १७२ ॥

सो० सोलखि गर्जि पुलोमचल्यौ राहु जिमि सोम पै ।
उन्नत तन तमतोम जोम भस्यो शर नवत जे १७३ ॥

दो० तबै अनिल अतिकोप करि कीनों बेग प्रचण्ड ।
भस्यौं बवण्डर असुरदल दसदिशि धूरअखण्ड १७४ ॥

चामर छन्द ॥

दैतके समूह मैं अमूह बाण छाइकै । काटि काटि बीर कों दिये धरागिराइ कै ॥ लाल धार लोऊकी कराल युद्ध मैं कढ़ी । दैत ओरतें महानदी समान सो बढ़ी १७५ ॥ व्याल सी लसैं करालबाऊ बीरकी कटी । कच्छसी प्रतच्छ

ढाल मच्छसी असी ठटी ॥ अंग कुञ्जरान के सुदीप से दिखातहैं। नक्र से इत्यादि चक्र चक्र से विभातहैं १७६॥ बालु से जवाहिरात जाहिरात जौंकते। बीचबीर सुंससे कढ़ें सप्राण चौंकते ॥ तीर पैं सिखार यूथ मोद पूरि गाजते। गीध काक ऊंतलै अकाश बीचभाजते१७७॥ सैन देव दैत्यकी दुहूं किनारसीबनी। कादरैं डरावनी सोहावनी भटै घनी॥ तानदी महान को पुलोम सेतुबाणको। दैत्य मोद दान को रच्यो सुभट्ट ठान को १७८॥ बायु को सुघेरिकै पुलोम भेषि भोरिकै। हेमपुंख ढेरिकै तजे नराच टेरिकै ॥ दैत्यकेे मझार मैं धरो बधौ पुकार मैं। बायु लागतो भयो बनेश ज्यौं सियार मैं १७९ ॥ मर्दि मर्दि अर्दि अर्दि नर्दि नर्दि काल सों। ढेरि ढेरि मारि भीरकी करी बिशाल सो॥ गर्जि गर्जि तर्जि तर्जि क्रुद्ध होइ युद्ध मैं। आठ से बली बधे बिरुद्ध शुद्ध उद्ध मैं १८० ॥

दो॰ तब पुलोम बरष्यो विशिख सहि न सको सो बाय।
भग्योबायुसगव्योमजेहिमनजुंलखहिंमुनिराय १८१ ॥

चौपाई ॥

हय ग्रीव पूखासन रणकै। दयोसमर महि शरको बन कै। मण्डल समअखण्ड धनुकीने। लख्योदनुज रबिसी छबि लीने १८२ ॥ त्यागत अन्तर नेक न परई। सरपर सरशर दिशिदिशिभरई॥ काढ़तधरतचलावतबाके। लखैं न कोउ दोउ दल भट बांके १८३ ॥ बाणसर्प से रतन जड़ाये। गीध पच्छ दोउ पच्छ बनाये ॥ फलखि फलखि से प्राण बिनाशन। छूटत भरहिं प्रकाश न आसन १८४ ॥ जित देखिय तित बाणहिं बाना। नहिं जहान महं रहा ठिकाना ॥ बिद्युत के समभरहिं उजार। शचुसैन तिमिकरहिं उजार१८५ ॥ पूष्वा कहं भट अश्व ग्रीव। सुरथ सहित छायो बलसींव॥ भयेअदृश्य बाणतेंसोई। जिमि रबिघने घननतेंहोई १८६ ॥

दो॰ मूसा से अरि शरण गुणि पूषा निज शर मारि।
डारिडारि दीनेधरणि परम क्रोध बिस्तारि १८७ ॥

मल्लिका छन्द ॥

भानु के समान बाण। भानु से मरीच बाण॥ रुक्म पुंख के निशान। दैत्य के हरन्त प्राण १८८॥ बाजि ग्रीव दानवेश। तैसोई करालवेश॥ बान बर्षिकै बिशेष। पूरि दीन्ह युद्ध देश १८९॥ काल से कराल बीर। कोप पूरि युद्ध धीर॥ त्यागतें अखण्ड तीर। ज्यौंमहान मेघ नीर १९०॥ युद्ध भूमि भूमि भूमि। फेरि बान घूमि घूमि॥ शत्रु सैन पैठि पैठ। बीर मूछ ऐंठि ऐंठि १९१॥ घोर दायबानि आनि। चारु चाप तानि तानि॥ शत्रु बीच डोलि डोलि। प्राण लेहिं बोलि बोलि १९२॥ युद्ध भूमि मे पिशाच। मोदिकै करैं सुनाच॥ योगिनी कपाल पानि। लोहुकों पिवैं सुखानि १९३॥ भूत प्रेतरुन्ड मुण्ड। बीरकेचबाहिं सुण्ड॥ आंतलै उड़ाहिंकंक। योगिनै पियैं निशंक १९४॥ अप्सरा चढ़ीं विमान। बीर को बरैं सुजान॥ देवदैत सों महान। युद्ध होत ओसमान १९५॥ फेरिफेरि कौ कमान। टेरि टेरिकै भटान॥ हेरिहेरि मर्मथान। बीरको वरैं सुजान॥ दैत्य शायकैप्रहारि। केतु काढ़िदीन डारि॥ बज्रतुल्य बाण मारि। छेदि चाप भूमिपारि १९७॥ कोप पूरिखड्गकारि। त्यागि दीन्ह बाण चारि॥ बाजि भानुके सुरारि। आशु हीवभे बिचारि१९८॥

दो० बिरथ बिधनु पूषातबै भगो इंद्र के पास।
हयग्रीव बरणत भयोकरत अमर दलनास १९९॥

चौपाई॥

भगसंवर संगरके माहीं। लागेकरन भटनकी नाहीं॥ तहांदनुज चापहिटंकारो। पूरिगयोमहि मंडलसारो२०० बिजुरी सरिस प्रकाशत आसा। तजनलग्यो शर सहित हुलासा॥ ताके शरकी झरलखि भारी। डरत भई सुर सेना सारी २०१॥ तब भग मग मग जग मग करतो। मारमार धन ध्वनि दिशि भरतो॥ टंकारत भारी कोदंडहि। चलेप्रचण्ड उरपूरि घमण्डहि २०२॥ तबते दोउ

भट स्यन्दन जोरी । खेलन लगे ललित रण होरी ॥ रुधिर रङ्ग वरषावहिं भूरी । लाल गुलाल उड़ै रण धूरी २०३ ॥ शर वरषहिं हरषहिं अधिकाई । सिरन फोरि ट्म काला बनाई ॥ लागे गदा शीश बहु टूटहिं । समर कुंकुमा केसम फूटहिं २०४ ॥ धरधर मार मार सो गारी । बाजेबाजहिं उफरवविकारी ॥ कौत धमारि मारि अति भारी । केसूतरु से सक्त सुरारी ॥ २०५ ॥

दो॰ भगकहं तब भेदत भयो संबर शरके जोर ।
गरुड़महाअहिको यथा गरजिघोर तेहिठौर २६० ॥

वसुकला छंद ॥

तबभग रिसाई । निजशर चलाई ॥ काटे महान ॥ सब शत्रु बान २०७ ॥ चौंसठि बहोरि । धनु बीच जोरि ॥ अपने नराच । कहि अब नबांच २०८ ॥ मास्यौ सुरेश । रिसिकै विशेश ॥ तिहि सहि कराल । दानव बिशाल २०९ ॥ धनुको अकर्षि । बहु बाण वर्षि ॥ दिय भगहि छाई । विक्रम बढ़ाई २१० ॥ माया अरोपि । नभ गयो कोपि ॥ नहिं सो दिखाय । धनि धुनि सुनाय २११ ॥ वरष्यो प्रचण्ड । शायक अखण्ड ॥ देवन उदण्ड । किय खण्ड खण्ड २१२ ॥ भगके शरीर । भरिदियेतीर ॥ तिलभर अबान । रवितन रहान ॥ २१३ ॥ सो लखि दिनेश । धनु धुनि विशेश ॥ निज अस्त्र डारि । पर अस्त्र वारि २१४॥ रानेश दाप । टंकारि चाप । शंबर सुरारि । मायापसारि २१५ ॥ छलकै महान । मोह्यो सुरान ॥ आपुहि अप्रान । महिपैं दिखान २१६ ॥ शतधा शरीर । करिपस्यो बीर । पुनि बल निधानु । तिहि लख्यो भानु २१७ । दिग्गज सवार । गर्ज्जत अपार । पुनि सो विशस्त । भरको प्रशस्त २१८॥ पर्वतसमान । पुनिसो दिखान । घनसो स्वरूप । नभमें अनूप २१९ ॥ पुनि भूमि बीच । लखिपरो नीच ॥ सुर सैन पैठि । गरज्यो सुऐंठि २२० ॥ हूमि देखि भेव । डरि भगे देव ॥ जित जाहिं भागि । तित लखहिं आगि २२१ ॥ शंबर अनेक । धावहिं सटेक ॥ पुनि

भरि घमण्ड। ह्वैघन अखण्ड २२२॥ बरष्या प्रचण्ड। गिरि उपलखण्ड॥ ह्वैशिखि महान। दाह्यौ दुरान २२३॥ अति ज्वलितज्वाल। सबदिशि विसाल॥ रथगज पदाति। दाहे विभाति २२४॥ पुनि महा शैल। ह्वै गयो फैल॥ तातें कुठार। असि निशितधार २२५॥ बरष्यो अखण्ड। रिपु करत खण्ड॥ इमि लख्यो तौन। सो कहैकोन २२६॥ रवि मरुत आदि। घनसरिसनादि॥ जे करहिं घात। आयुध उदात २२७॥ तेहि ग्रसत तौन। अतिवीर्य भौन॥ लखि इमि विपत्ति। सेना नसत्ति २२८॥ अति डरहिं पागि। भग गयो भागि॥ जितरहे शक्र। अति समर वक्र २२९॥ तब असुरतौन। भगभयद जौन॥ गरज्यो उदण्ड। उरभरि घमण्ड २३०॥ गोकोप पागि। जितरहे आगि॥ तितगरजि जोर। बोले कठोर २३१॥

दो० आगिभागि मतिजाइयो मोतें अतिडरपागि।
तोहिरहेंगो भाषि इमिलोपभयो नयलागि २३२॥

चौपाई॥

निशि करशीत अस्त्र तिहि बारा। कोपि असुर सेना महंमारा॥ नखत इन्दवै काल समाना। लागे हरन परन को प्राना २३३॥ बेगन चलत दलत दल भारी। भये शीत कर शिखि द्युतिधारी॥ सुरथ तुरङ्ग मतङ्ग सुभटहिं। दहत भये करि अस्त्र झपटहिं २३४॥ महा बायुजिमि विटपउखारैं। तिमि बधि बड़े बड़े भटपारैं॥ अस्त्र बेगतें गरिगरि बीरा। परे रुधिरतें भरेशरीर २३५॥ ताको छविवांको रणताको। काहहिं असुर यह प्रलय पिनाको॥ शशि को शरदे सिरदे सुरदे। परे भूमि असु नशहिं सपुरदे २३६॥

दो० सुधाकरहि दनुजन लख्यो दुधाकरत अरि श्रंग।
सभै सभै भागत भये त्यागत अंगउमंग २३७॥

रोलाछन्द॥

देखि इमि निशिनाथकों निज करतसैना खण्ड। दानवनके चन्द्र सूरज सरभसलभ प्रचण्ड॥ तालसे टंकारि धनु

उडराय ऊपरजाय । छायदीन्हो सुरनपैं बढ़ि शरनके समु-
दाय २३८ ॥ देव ताकेशशि इतै उतदैत्यके शशिसूर । पूरि-
दीन्हें दिशन शरअरु धूरकीन्हे सूर ॥ जलदसंवर्त्तक सारस
भेरण प्रवर्त्तक लीन । पौनधीर धुरीन कों तनहीन करि
कैदीन २३९ ॥ समरमें रथ फेरिफेरि निशानकोंबजवाइ ।
तुमुलशब्दहि करत भे निज दल बढ़ाइ बढ़ाइ ॥ भेरि शङ्ख
मृदङ्ग दुंदुभि बजे दोउओर । लग्यो संगरघोर होवेभयो सब
दलशोर २४० ॥ कटे सुण्ड वितुण्डके बहु सुरथ हयकेभुण्ड ।
भटनिके बहु खण्ड डोलहिंधरनि नाचहिं मुण्ड ॥ कटेकर
पगशीश उरुउर पटेसोरणभूमि । भूत प्रेत पिशाच बिल-
सहिं तायलै अतिभूमि ॥ २४१ ॥ शूल शक्तिभुशुण्डि शायक
भटकरनतें छूटि । लूट प्राणरिपूनकेमहिपरे राजहिं टूटि ॥
सुभटकी ललकारतुरंग पुकारि द्विरद चिकार । भरी ध्वनि
कोदण्डकीटङ्कारशस्त्र प्रहार २४२ ॥
दो० इमि निशिकर अरु दैत्य है लरै नैन करिलाल ।
कालसमानकरालरथ चालिचलितिहि काल २४३
सो० अतिकराल तिहिकाल असुरनसों अरुसुरनसों ।
सङ्गर मच्यौ विशाल नच्यो काल मनु सुदरच्यो २४४

चौपाई ॥

अमर असुर निजधनु आकरषहिं । बरषहिं विशिष
हृदय अति हरषहिं ॥ शरतें भिदे भभरि गज धावहिं ।
तिमि हय ह्व अति द्वंद मचावहिं २४५ ॥ वीरनके वरकेतु
फरक्कहिं । कादरके उर सडर धरक्कहिं ॥ गदा परश्वध
शूल चमक्कहिं । भरे वीर रसवीर तमक्कहिं २४६ ॥ समर
भूमितनकटे पिरज्जहिं । भूषण उडगण से छबि छज्जहिं ॥
भरे चाउ रणधीर गरज्जहिं । लरहिं टरहिं मुदित तर-
ज्जहिं २४७ ॥ देखि समैरिहि दौरि अरुरहिं । आयुध
धरेभरे रसयुजझहिं ॥ सिंह सरिस रिस पूर झपट्टहिं ।
हंट्टहिं नाहीं दट्टहिं डट्टहिं २५८ ॥

दो० श्रोणित सरित भयावनी काढ़ी बढ़ी अतिजोर।
सैनदोऊभुजनि खरिरही प्रलय सिंधुसीघोर २४९ ॥

बरवै ॥

खरेउ विरोचन भटसों विष्वक सैन। दुंदुभिकहं बजवावत कीन्हें सैन ४५० तेहिछण साध्य शिरोमणि दैत्यहिं टेरि। तीन बाण उर अंतर मारेउ हेरि २५१ ॥ ताकेलगे कोपतें दानव पूरि। धनुध्वनिकै वरशायक बरष्योभूरि २५२ विष्वकसैनहिं मारे अहिसेसात। धसे धौरितें धरणी छेदत गात २५३ ॥ तिनतें वेधित ह्वैकै मुरछा पागि। विष्वकसैन गयोरहि ध्वजतें लागि २५४ ॥ छणमहं चेतहि धरिकै तानि कमान। भयो दनुजके दलमहं वरषत बान २५५ ॥ तैसेहु वीर विरोचन रोचन युद्ध। सुरमहं शायक बरष्यौ ह्वैकै क्रुद्ध २५६ ॥ जलधर के सम गरजत त्यागततीर। विबुधन वधत विविधि विधि दानव धीर २५७ ॥ बिजुरी सम धनु चमकत श्याम शरीर। मारत परहि समर मैं विस्मृत वीर २५८ ॥ आगत गजो झांकि गज पदतें पत्ति। रथीह पीतिसि इमि सुर सैन भगत्ति ॥ २५९ ॥ अपने शिविरहि सरदत भागहिं देव। काल सरिस लखिदनुजहिं भरि भय भेव २६० ॥ ताकी विशिखासन ध्वनि नाशनि धीर। सुनि सुनि ताके आवैं पास न वीर २६१ ॥

दो० उरे विरोचन बाणतें भरे हृद दुखभूरि।
टरेबलो सुर शक्र ढिग करे दूरि मगधूरि २६२ ॥

चौपाई ॥

विष्वकसेन साध्यकेभारे। चौदह सहसपदातीमारे॥ तब हतशेष भटहिलैसंगा॥ चलेउदनुजपैं साध्य सुढंगा २६२॥ तेसब रिपुहि सबै दिशि घेरी। वरषे आयुध नैन तरेरी ॥ तबहि विरोचन रिपु मद मोचन। कीनो खड्ग लाल करि लोचन २३४॥ काटत केतु शरासनशीस। भरोसमर महि-दानवईश ॥ उछरि झपट्टि दपटि ह्वै आडो। करिअसि विधि रिपुपैं भयमाड़ो २६५ ॥ रथतें हयतें भिन्नशरीर।

गिरहिं भूमिकटि कटिकैवीर ॥ समरविरोचन कालसमान। करतभयो गहिचर्म कृपान २६६ ॥

दो० श्रीशमहावत के काढ़ि गिरहिं कटेरनमाहिं।
शैलशिखरतें उपलसम हूत उतअति दरशाहिं ॥

पञ्झटीछन्द ॥

रणभूमि बीच अतिको पछाड़ि। बड़भटन मारि दीने गिराइ॥ जिमि अजायूथमहं व्यगमहीप। तिमिलख्यो विरोचन सुरसमीप २६८ ॥ जेजाहिं सामुहें तासुवीर तेइंधन होहिं ज्ञतासुतीर ॥ रणमें हुतभुत डोलत प्रचंड। असिलिएलिए लनुकालदंड २६९ ॥ करिदये शत्रुतन खंडखंड अतितप्यो जेठजिमि मारतंड ॥ केते कमंध धकधक पुकारि रणदौरि रहेकर शस्त्र धारि २७० ॥ शोणित की सरिता कढ़ीलाल। लखिखड़े होहिं रोवां विशाल ॥ भटविष्वक्सेन अनीक मध्य। इमिलख्यो विरोचन सुरअवध्य २७१ ॥

दो० तिमिकुजंभ अरुअंश ए उभयलरे बलधाम।
महाइषभ जिमिइषभसों कीन्हीं अद्भुतकाम २७२ ॥

चौपाई ॥

अंधकार रणमें करिदीनो। महितें अंबरलौंभरिदीनो ॥ दशसहस्र कुंजर संगलीने। अंशचल्यो तब अतिरिस कीने ॥ २७३॥ गजानीक कहं आवतजोई। कूद्योरथतें दानवसोई ॥ लैकैगदा वज्रसी भारी। चल्योकाल समबदन पसारी २७४ ॥ मर्दनलग्यो गजनकों धसिकै। बकरीबीच बाघसो लसिकै ॥ गदाप्रहारि प्रहारि प्रचारी। चूरचूर करिदीने डारी२७५ ॥

दो० लागेगदा महान गजघूमि गिरहिं गतप्रान।
धनेभगें निजदल दिशा चिकरतशैल समान २७६ ॥

प्रमाणिकाछन्द ॥

कुजंभ दंभसों भरो। अरंभ मारिको करो ॥ तहांमनो महामरी। दुरहृदेश मैं परी २७७ ॥ विभिन्न अंग भूमिकै। गिरैं अनेक घूमिकै ॥ कितेविनास वारकै। भगें महा चिकारकै २७८ ॥ विना मतंग वाणकै। पराहिं

चासमानके॥ लहूभरै शरीरसों। करैं चिकार पीरसों२८९॥
किते अदंत होयकै। पुराहिं घोर रोयकै। बहोरि क्रोध
पूरिकै॥ गदाहि दैतदूरिकै २८०॥ सुधारि चाप ठानसों।
लगो लरन्न बाणसों॥ गजस्थ अंश हेरिकै। कुजंभ नामटे-
रिकै२८१॥ तुरन्त मारिकैधरै। दयो भगाय कुंजरै॥ बहोरि
सो रिसाइकै। गदा गई उठाइकै २८२॥ दिशा प्रताप
छाइकै। चल्यौचलाक धाइकै॥ जलद सो गरज्जिकै। बनेशसो
तरज्जिकै २८३॥ निशान लाखनैनकै। कियोविनाश सैनकै॥
दिशान घोर शोरभो। सजोर दैत्य ओरभो २८४॥ मुखै
पसारिकालसो। कुजंभ तो चलै जसो॥ स्वरूप जोरिह क्योंलखो।
कपालि अंतकालको २८५॥ गदा प्रहार घोरसों। पराहिं
नाग जोरसों॥ मरैहि देवकेदलै। थिराहिं जाइजंगलै२८६॥
उठाइ सुगड भागते। समीर धीर त्यागते॥ कुजंभ सोंह
नाचलै। न देवकी कछूचलै २८७॥ दुखित्त चित्त होयकै।
पराहिं जोर जोयकै॥ त्रिशूल मारि शंभु सो। लसोगदी
कुजंभुसो २८८॥ अकाशयुद्धमें खरे। दुरहमेघ सेवरे॥ कुजंभ
बेग पौननै। दिये उड़ाइ ताखनै२८९॥ निहारि सिंहसों
यथा। म्रगाभगें भगे तथा॥ मतंग जंगके बरे। भरेपरे डरे
टरे२९०॥ कुजंभ सामुहें तहां। कोऊ न देवता रहा॥
बहोरि शक्रतापलै। पठैदयो महादलै २९१॥ बखान तासु
कोकरै। अदेव घोरगै हरै॥ निशान दुंदुभी बजैं। सुनत्त
मेघऊ लजैं २९२॥ तुरंग वीर कुञ्जरा। सुरथ्यतें भरीधरा॥
समुद्रसो अशुभको। कुजंभ सामुहेंचलो २९३॥ तबै सबैधरा
हली। कजो अदेवके बली॥ अकाशधूरिसों भरो। दिखाइ
सूना परो २९४॥ कुजंभ सो निहारिकै। गदाकरै सुधारि
कै॥ दलैदलै तबै चलो। अनन्दसों भरोभलो २९५॥ कुजंभ
रूप जोहिकै। रहोससैन मोहिकै॥ तथापि धीरसोंलरी।
प्रचण्ड कोंकतें घरी २९६। तहां कुजंभ कोपिकै। महाप्रलै
अरोपिकै॥ दिशानमें प्रकाशतो। दलैभयो विनाशतो २९७॥
दो॰ इमि कुजंभ अरु अंशतें भयो भयंकर युद्ध।

लस्यो दनुज तहं क्रुद्ध अति कालरुद्र सो युद्ध २९८ ॥

चौपाई ॥

असिलोमा मारुतसंग करई । अतिहि पराक्रम रणमहं करई ॥ दीह सुरथ चढ़ि दिशि भय छावत । माह मोदतें शङ्ख बजावत २९९ ॥ बलभारत चापहि टंकारते । जीव न बचत यह आशु पुकारत ॥ वर्षत भये करी रणबाण । ध्वनि ध्वनि कै करके कठिन कमान ३०० ॥ मर्दत रथ बारन के यूथ । अर्दत हय सुर सुभट बरूथ ॥ लस्यौ वायु संग सि असिलोम । भिभि खर्भिस्यो मयाङ्क तम तोम ३०१ ॥ नखशिख लौं सब अंग भयानक । बाजत बोलत बजत जनु आनक ॥ कालरूकसों कराल रणगाढ़ो । लस्यो दनुज अति दीरघ दाढ़ो ३०२ ॥

दो० बल अगाध जलग्राह भुज धनु अवर्त्त सर मीन ।
चर्म कटे धरि कै लस्यो दनुज सिंधु सम पीन ३०३ ॥

सो० खड्ग जीह धार दंत सुख फारे मण्डल धनुष ।
मर्दत सुरन समंत लसो दनुज रण सिंहसो ३०४ ॥

इंदिरा छन्द ॥

सुरन मारतो छाजतो भयो । रिपु विदारतो राजतो भयो । अतिहि कोपतें तर्जतो भयो ॥ समर चोपतें तर्जतो भयो ३०५ ॥ तिम अखण्ड मैं मारतण्डसो । जमत अण्डमैं कालदण्डसो ॥ सुभुज दण्ड मैं वज्र खण्डसो । लसत चण्डमैं यों कोदण्डसों ३०६ ॥ हरण सागुह मैं अग्नि ज्यों घसै । अमर जूह मैं दैत्य त्योंलसै । वधि अनेककों नेकमैं हंसै ॥ निरखि टेककों बाहिनी चसैं ३०७ । असुर ढेरि कै भेरि भेरिकै । सुरन घेरिकै नामटेरिकै ॥ हमत रेरिकै चापफेरिकै । लरहिं हेरि कै त्रास गेरि कै ३०८ ॥ अमर प्राण हैं लूटते घने । गहि हथ्यार हैं जूटते घने ॥ निशित बाण हैं छूटते घने । तुरग यानहैं टूटते घने ३०९ ॥ चढ़ि प्रचारते शस्त्र डारते । रिपुन मारते भूमि पारते ॥ शिर उखारते पेट फारते । सुभन थारतें काहिं मारते ३१० ॥ रुधिर की नदी वेगसों मढी । अवण सों कढी युद्ध मैं बाढ़ी ॥ दुहुं दिशान सों ता

थलैबढ़ी। अतिहि प्रानसों प्रैतमी चढ़ी ३११ ॥ कर गरे कटे पेटऊ फटे। समरचौहटे लाखहेंपटे ॥ लखिबलीडटे। निकुनाहटे। इतरमै घटे आसुछीनटे ३१२ ॥
दो० असुर अमरतें रणकरहिं गज गजसों अतिझूमि।
बाजिवाजि सनबाजहीं रथतें रथ रणभूमि ३१३ ॥
॥ चौपाई ॥
बज्रभट भिरि पटकहिं रणधीरन। असुर चबाहिं किते सुरबीरन ॥ अतिसंघट्ट भयो दोउ ठट्टन। असि अरु पट्ट मारधरहीन ३१४ ॥ छूटे केश कवच तनटूटे। आयुध बिना वीरबहु जूटे ॥ शक्ति परश्वध करहिं प्रहार। वधहिं परस्परकरि ललकार ३१५ ॥ तबसकोप मारुतगहिभाला। गर्जि करालामसु परघाला ॥ तातेंकह्यो धनुष बलयुतको। असिलोमा दिति सुत पुरहुत को ३१६ ॥ काटि धनुवरण मारुत तर्पो। अगणित अगनि वरिस शरअर्पो ॥ तनअध धसे लसेते कैसे। बरगिरि बहु अहि प्रविशत जैसे ३१७ ॥ तबसकोप है उरभरि शोभा। दूजोधनुष धर्यो असिलोमा ॥ तातें तजन लग्योशर भावत ॥ हरि रथांग करशूल लजावत ३१८ ॥ सहसन शीश अमर के धरतें। करिकरि भिन्न भरी महिशरतें ॥ व्याकुल होय खोयकै चेतहि। पर्यो पवन रथतें रणखेतहि ३१९ ॥
दो० इमिमारुत कहं मोहिकै असिलोमा वनिकाल।
इकतिससहस बलीवधे शत्रु अनुगतेहि काल ३२० ॥
सो० पुनिशर वरषत घोर सकल ठौर अति जोरमढ़ि।
ताकिनाकपति ओरचल्यो असुरसिरमोरबढ़ि ३२१ ॥
॥ समानिका छन्द ॥
इत लल्लकारसों। अश्वनीकुमारसों ॥ युद्धठान तोभयो ॥ क्रोधवीरता मयो ३२२ ॥ चारु चाप बाणतें। चर्मऔकृपाणतें ॥ घेरिकै महा लर्यो। ब्योम शब्दसों भर्यो ३२३ ॥ वारभांति छावतो। शंखकों बजावतो ॥ विश्वकों हलावतो। शोभिरत्त भावतो ३२४ ॥ चापकों टंकारि कै। सिंह शा

हुंकारि कै ॥ बाणकों प्रहारि कै। दीन्ह अंधियारि कै ३२६ ॥ देव वैद्यसाथ सैं। शस्त्रधारि हाथ सैं ॥ यत्नरत्न कोपसों। भे प्रमत्त चोपसों ३२७ ॥ चारि ओर घेरि कै। मारु मारु टेरि कै ॥ शत्रु बाण सों फटै। छाय छीनता भटै ३२८ इन्द्रकोप धारि कै। भल्ल मारि मारि कै ॥ काटि शत्रु आयुधै। गर्जतो भयो युधै ३२९ ॥ आपने शरान सों। बीरकी धरान सों ॥ देत काटि काटि कै। भूमि दीन्हि पाटि कै ३३० ॥ तौन काल खोड़की। आपगा कुढ़ोड़की ॥ तत्र तोर तें कढ़ी। इन्द्र ओर तें बढ़ी ३३१ ॥ चापकों अकर्षि कै। बाण इन्द्र बर्षि कै ॥ गर्जतो सनद्दसो। वारिदै जनद्दसो ३३२ ॥ कोपकों विशेष कै। देव मैं प्रवेश कै ॥ सोहतो भयो तथा। व्याल आखु मैं यथा ३३३ ॥ युद्ध खेत खेत सों। देव ऊख सों बचे ॥ ताहि नाशतो बसे। इन्द्रतत्र नागसे ३३४ ॥

दो० देव वैद्य के भट तबै सहि न सके रिपु मारि।

उत्तर दिशि भागतभये आरत ध्वनि निस्तारि ३३५ ॥

चरखा दोहा ॥

इमि लखिकै निज रखगति अति मति भट अश्वनीकुमार।

शिरफेरि फेरि ढिग भिरऊ तहि चल्यौ एक सरदार ३३६ ॥

चौपाई ॥

शूल गधरे असुरहि ललकारत। भयो शंभु सम शोभा धारत ॥ गर्जिकै बहुत इन्द्रकै कोखे। तीनबल्ल गद मारे चोखे ३३७ ॥ तिनशरतें बेधित ह्वै सोई। कीन्ही गदा मदा कुल होई ॥ मारी शूर सुतहि सहजोर। रुहि रहि गयो सुभट सह जोर ३३८ ॥ तबनिज शूलशस्त्र प्रतिकूल। दीन्हों हलकारन निर मूल ॥ ताहि गदा तें भूमि गिराई। चलो सर्पपै जिमि खगराई ३३९ ॥ कूदि व्योमतें गदा प्रहारी। परै बज्र जिमि अल्प पहारी ॥ तातें अर्दित ह्वै भटभारी। रुभय शक्र के पास सिधारी ३४० ॥

अडिल्ल ॥

एक चक्र भटचक्र रखागित देवमों। संगर कीन उमंग गई भट भेव सों ॥ छाय दिये शर घोर करो न ओर सों।

देवन मैं सब ओर अनूपम तोर सों ३४१ ॥ तैसेइ ते सुर सुभट शस्त्र बरषावते। मारु मारु धरु मारु प्रहारु मचावते ॥ बीर भुके दुहुं ओर रुके नहिं नेकहू। धीर सबै रण खेतन कादर एकहू ३४२ ॥ एक चक्र को सुरथ एकही चक्र को। सहसन हय सह छजै लजै रथ शक्र को ॥ अपर लोगकों देत प्रेत पुर भोग है। एक चक्र भट एक चक्र न्रप जोग है ३४३ ॥ देवन के सिर काटि दई महि पाटि कै। बांटि बांटि अरु अंग गिराये डांटि कै ॥ तैसेइ निर्जर यूथ बधे बहु दानवै। मारि मारि कै शूलगदाअसनीसबै ३४४ ॥ भागहिं पागहिं त्रास निहारि प्रहार कों। लागहिं ते उरमैं छुर धारे धार कों ॥ यों मिलि दानव देवभरे अति जोस सों। संगर कीन महान भरी ध्वनि व्योमसों ३४५ ॥
दो० तबहिं रनाजित चतुरचित सकलसाध्य सिर मोर।
मास्यो दानव राज पैं मघन अस्त्रअति घोर ३४६ ॥
चौपाई ॥
तातें कढ़े शत्रु समुदाई। छाय गये दानव दल आई ॥ एक चक्र निज आयुध मारे। पर आयुध निखण्डि महि डारे ३४७ ॥ पुनि निज दश दश दिशितम हरता। पवि सम शरन हने भट भरता ॥ बरष्यो बहुरि बाण सो कैसे। भादव बारि बलाहक जैसे ३४८ ॥ तातें काटि काटि अरि अंगन। भरि दीनों सिगरो रण अंगन ॥ भागहिं अमर समर महं मारे। कमर धरे कर धीरज हारे ३४९ ॥ एक चक्र दृग बक्र सजोर। धसो वितुण्ड भुशुण्ड की ओर ॥ कारे जलधरसी छबिधारे। भारे गजगर्जहिं बिकरारे ३५० ॥
दो० बिन गरदन बिन रदनके बिना पदन के कीन्ह।
मरदि मरदि दुरदन धरणि सुरदनसों भरिदीन्ह ३५१ ॥
भुजङ्ग छन्द ॥
लग्यो मारिबे डारिबे भूमि माहीं धरे भूरिको पै बन्यो काल जैसों। लसै केसरी नागके यथ मैं ज्यों लस्यो नागके यूथमैं तत्र तैसो ॥ लिये हाथ भारी गदा बज्रकीसी हुकै

मार मैं सो करै कोटि नाशा। यथामेघकों पौन त्यों तैान सोभ्यो भगायो सबैते भगे चारि आसा ३५२॥ बहोरैं गयो बाजिके जूह लाहीं लख्यो कोपपूरो करै प्राणनाहीं। कईरंगके संगके जंगसेते बघेलादि भारी गदाको तहांहीं॥ चढ़े बीर भारे सबै शस्त्र धारे घने मारिकै आसुही भूमि डारे। भगैं बोलि हाहा भरे त्रासकेते डरे दैततें देवयोधा गरारे ३५३॥ कहैं घोरनाये सबै यों डराये भगौरे भगौ शत्रु है बीर्यशाली। घरी एकमें मारिकै डारिदै है सबै कोप पूस्यो यथा मुण्डमाली॥ क्षये दुःखतें देवता युद्ध भागें लखै दैतके नैनमें कोप लाली। तबै साध्यह्र इंद्र की ओर आयो महा भीतछायो रणे त्यागि हाली ३५४॥

दो० तेतिस सहसन मारिकै एक चक्र रणबक्र।
लखो भासहरि चक्रसम प्रमुदित दानव शक्र३५५॥

चौपाई॥

तहां खग व्याध रुद्र कहं घेरी। बल बलवान भिस्यौ धरु टेरी॥ देव पारषद के समुदाई। बढ़ि बढ़ि भिरे नि-शान बजाई ३५६॥ त्यागन लगे शस्त्र विधि नाना। शूल शक्ति शर गदा कृपाणा॥ तिनमहं लस्यो दनुज बर कैसे। अहि महं विनता नन्दन जैसे ३५७॥ सबके बाण बाण सों काटत। सब कहं सिंह सरिस रण डाटत॥ सब पैं अपने आयुध पाटत। फिरत समर वर विक्रम ठाटत ३५८॥ तब खग व्याध बाण बहु मारे। दानव के मस्तक मधिमारे॥ तातें पीड़ित ह्वै बलवान। गरजतभयो धनेश समान ३५९॥

दो० बहुरि रुद्र करते भये दृष्टि बाणकी घोर।
छाय दिये सब ठोर ने अहिरि पर दल ओर ३६०॥

शिखरनी छन्द॥

तबै कूद्यो सोई हरसुरथ पैं मत्तगजसो। मरेघोरे चारों ध्वजसहित भोजान रणसो॥ बली शूलीभूमैं यम समखरे ह्वै लसंतभे। सुधारे कोदंडै लखि असुर सारे त्रसत भे ३६१ तहां भारे कारेशिव भटगरारे उमड़िकै। झटे लागेनाना

तमन रण में गम्न चढ़िकै ॥ भयो छोरो भारी समर भट दौरा तुरतही । बधै छुद्रै रुद्रै काहहिं दनुजिते दैत सतही ३६२ ॥ भयो भारी कारो बलप्रबल संग्राम थलमैं । करै धारै भारी तरून तरुमोद्द शंभुदलमैं ॥ कटे घोरे हाथी सुभट सुर साथी सुरपक्ष । नहीं दीखै खाली यम यथा तथा यद्यपक्ष ३६३ ॥ घनेघूमें नमें विगत सिरके होय शरसों । धरौ मारौ मारौ कहाहं बकुलै कोपपरसों ॥ महाभारी बाढ़ी रुधिर सरि संग्राम महिमें । बन्यो दानौ सोई खग पति यथादीह चहिमें ३६४ ॥ मरे हाथी घोरे तन रुधिर बोरे सरसते । परे बारे चोरे गत असु अघोरे दरशते ॥ उतै दानव योधा बल युत इतै रुद्रलसते । करै काजें दोऊ कामर करते हेरि हंसते ३६५ ॥

दो० महादेव बलबीर दोउ खरे धरे कटि चीर ।
भरी भूमि कुरदान तें रण के चारों कोण ३६६ ॥

चौपाई ॥

राऊ अनेक पादहर साथ । कीन्ह समर दानव कुल नाथ ॥ दोऊ बली बीर अति भारे । पंच बदन से गुणी गरारे ३६७ ॥ बढ़ी रुधिर सरिता भय दानी । मानहुं रौद्र करी रजधानी ॥ बल समुद्र तहं रुद्र अकरिकै । बरषे विशेष बीरविधि करिकै ३६८ ॥ असुर सुरथ कहं शरतें तोरा । बधे सूत सह चारऊ घोरा ॥ तब दूकहरके गण रण बढ़िके । मारी शक्ति इतै लख पढ़ि कै ३६९ ॥ तहां सकोप रुद्र रथभारी । रुरतें मलि मलि दोनो डारी ॥ बधेउ अमित पारषदन कोपी । तूरण रुद्र रुद्रता लोपी ३७० ॥

दो० बरष्यो बाण प्रचण्ड ह्वै मेघ समान अखण्ड ।
खण्ड खण्ड देवन कियो पूरि दियो ब्रह्मण्ड ३७१ ॥

मालिनी ॥

उभय सुभट भारे । जीतकी आस धारे ॥ रणमहं धिकारे । सोहते गौरकारे । तकि तकि शर सारे ॥ सर्पलौं दर्प वारे । बधि बधि रिपु डारे ॥ सूरमाने सुधारे ३७२ ॥ छंद

तेहि ललकास्यौं। कोपि द्वै बाण मास्यो ॥ असुर धनु सुधास्यौ। काटि कै भूमि डास्यौ॥ पुनि परहि प्रचास्यौ। भल्लसोंही विदास्यो॥ शिखि सम बपुधास्यौ। देवता दारु णास्यौ ३७३ जलसुत सहनाई। ढोल भेरी सुहाई॥ दुन्दुभिनिबजाई। सुरकोंमोददाई॥ ध्वनिदशदिशि छाई। कान तेना सुनाई॥ तुमुल अतिलराई। कौनसोंसे कहाई ३७४॥ धरणि रुधिरधारा। पूरिये। युद्ध सारा॥ पलमिलि तेहि वारा। हैगयौ रौद्रगारा॥ खंग सुनकासियारा। तचकीनो अखारा॥ किलिकरहिं अघारा। छब्धिगाढ़ीअपारा ३७५॥ सुरथहिरद घोरे। वीरहैं चारओरे॥ सबरण रमबोरे। मनुके चित्तचोरे॥ नभमहं ध्वजधोरे। सोहते पांतिजोरे॥ जनु उड़हिं अघोरे। हंसके चारु छोरे ३७६॥ फरहरहिं पताके। युद्धयोधा पताके॥ सुकुट गिरहिं ताके। ईशयों उचताके॥ भटतहं रसछाके। ठानतेरारिबांके॥ बज्रसहित बिधाके। त्यागते युद्धधाके ३७७॥ अमर असुर राजे। सूरतासाजसाजे॥ निजनिज दलराजे। हस्तमें शस्त्रताजे॥ तेहि समरजुबाजे। चारिहुओरबाजे॥ सुनतजलदलाजे। आसुही भीरु भाजे ३७८॥

दो० इमि अजैकपद राहुमें होतभयो संग्राम।
कौनसकैकहितौन अब जौनकियो जयकाम ३७९॥

चौपाई॥

तहं धूम्राक्ष रुद्र रिसिधारी। कोपि शक्ति केशो कहं मारी॥ तैसेइ रौद्र रुद्रके योधा। डारनलगे शस्त्र भरि क्रोधा ३८०॥ केशीरथ बढ़ाइ बरजोर। बरष्यो विशिखदेव दलओर॥ तजन लग्यो आनलसें ज्वाल। समर सुरअतिही बिकराल ३८१॥ गरज्यो बहुरि कोप करि सोई। ध्वनि सुनि रहासचेत नकोई॥ ब्रह्मअगड अतिघरथरहाला। डरे देवलखिशत्रुकराला ३८२॥ लागो समर होन अतिभारी। देवदनुज गणको क्षयकारी॥ आयुध दुहुंदिशि चले अनेकन। बधनलगे रिपु गण गहिटेकन ३८३॥

दो० सबै सूरसिसितें भरे सबै शस्त्र धरधीर।
सबै जीत आशाधरे सबै प्रहारहिं तीर ३८४ ॥

मौक्तिकदाम छन्द ॥

लरे भरिजोर सुजोर समुद्र। उतै भट कोपि इतै प्रभुरुद्र॥ उड़ी नभरेणु गई दिशि छाइ। भरी ध्वनि चारिदिशा अधिकाइ ३८५ ॥ भयो गरको अतिही अंधियार। कछू न दिखाइ परै तिहिबार॥ सुनाइ दशौदिशि शब्दहि शब्द। प्रलै मह गर्जहिं ज्यों अति अब्द ३८६ ॥ मच्यो अतिही तित संगर घोर। बधैं पर वीरनको दुहुंओर॥ अपान बिरान परै न लखाइ। बधैं तेहि सन्मुख जो मिलिजाइ ३८७ ॥ हतैं सुर देवन को अति कोपि। दैत्य दैइत्यन मारहिं चोपि॥ भरी धरणी भट मांसहिमांस। कटे तन शोणितही चहुंपास ३८८॥ लसैं भटके तनशोणित बुन्द। बढ़्यो अतिवेगन युद्ध समुन्द॥ चलैं असिपाट्टप चोर पहार। भरे सबशस्त्र दिशान अपार ३८९॥ गरज्जिगरज्जि लसैं दिशि छाइ। तरज्जितरज्जि चलैं हर्षाइ॥ दपट्टिदपट्टि झपट्टिझपट्टि। लरैं जिमि मल्ल लपट्टिलपट्टि ३९० ॥ बधैं हरके गण दानवयूथ। दैत्यबधैं हरभट्ट बरूथ॥ परस्पर होत तहां अतिमार। परे महिमैं मरिकै कहगार ३९१॥ तबै भट कोपि महा रिसि छाइ। कियो अतिनाद कमान बजाइ॥ तज्यो तबहीं कुलिशास्त्र रिसाइ। कढ़े बहु आयुध के समुदाइ ३९२ ॥ हते तेहितें हरके भटघोर। बचे कछु जौन भगे सबओर॥ मची ध्वनि हा अरु हा तिहिठौर। सहैं सकि नाहिं अदेवको जोर ३९३ ॥

दो० इमि कोपी धूम्राक्षमिरि भरयो भूमि सबभुण्ड।
ह्वैगिर सुण्डवितुण्ड के रुण्डचरण करमुण्ड ३९४ ॥

चौपाई ॥

वृषपर्वा निष्कुम्भ दपटि कै। भिरत भए भरि जोर झपटिकै॥ सुतहि कह्यो वचन वृषपर्व। रण रथ चलु बढ़ाइ इहिपर्व ३९५ ॥ अमरदलहिं कुपित ऐखर्व। तातें काटिहैं सिर बिनु सर्व॥ वरप्रिबाण त्रिभुवन काहूं बधिहैं। वीरपने।

करि निजजय सधिहैं ३९६॥ तब बढ़ाइ रथ चल्यो सवेग। वरषत सम्य सुरिड असितेग॥ सके न सहि सुरमारि असुर की। भागे राह लिए निज पुर की ३९७॥ तब निष्कुम्भ फिरऊ यह टेरी। भिरत भयो बजवावत भेरी॥ फिरि फिरि अमर समर अभिलाषे। मचुहि घेरि मान धरु भाषे ३९८॥ तबते उभय अभय सरवरषे। फेरि फेरि धनु हर धनु सरषे॥ चितै चितै रिपु ओर तिरीछे। लरते भए विजय कहं ईछे ३९९॥

दो० लसै दुहुंके बाणसों दुहुं लहु युत गात।
कुसुमित किंशुक विटपसे करत बाण बरसात ४००॥

चंचला छन्द॥

देवकोप पूरि पादपै तज्यों उखारि एक। ताहि बीच हीं गह्यो अदेव धारि युद्धटेक॥ ताहितें हते अनेक देव जे हते लरत। शीशपैरहाथ हीन लाखहूं भयो करत४०१॥ मुण्ड के विना वितुण्ड भुण्ड दौरते दिशान। टूटि कै परैं सुरथ्य वाजि लाखहों अप्रान॥ दैतकों निहारि देव जोरसों चलो रिसाइ। श्यामशैलसों लरन्नकों मनो सुमेरू जाइ ४०२॥ जूटते भए दोऊ विशाल ठौंकि ठौंकि ताल। कोपसों भरेतजैं कराल लाल अग्नि ज्वाल। सोहतो अदेव संगदेव तौन युद्धवीर। टेरि कै भयंकरै मनोरथै करत्त वीर ४०३॥ कूदि कै अचूक दैत नेहनो प्रचण्डमूक। ताहि धारि ह्वैगयो घरीकलों अचेत मूक। धीर धारि कै बहोरि सो सुधारि कै सुचाप॥ वाणसों भरयो दइत्यके दलै महा प्रताप४०४॥ अट्ट हास कै प्रगट्ट भाइ तब्ब दानवेश। वाण वर्षि कै दयो पुराइ शुद्ध युद्ध देश॥ यत्रजाहिं देव तत्र शत्रु के लखाहिं पत्र। सूटते कमान सों प्रतत्रलत्र हो इकत्र ४०५॥

दो० दपपर्वा निष्कुंभइमि लरेतहां विकराल।
देवसैन भागतभई जानि दनुज कहंकाल ४०६॥

चौपाई॥

तहं प्रह्लाद काल तेहिकाल। करत भए संगर विकराले॥ समर समय कविराज पुरोधा॥ विजय योग अनु-

देशहि सोधा ४०७ ॥ होमि हुतासन विप्रन दान। दीन्ह
विविधि जो जामन मान ॥ उसना विजय माल सिर बांधी।
श्री प्रह्लाद चलेरथ आंधी ४०८ ॥ भरत काल संग जानि
सुजाना। रचा शुभकारी विधि नाना॥ अयुतशिष्य बैठे जप
काज। दनुज राज जिमि जीतहिं आज ४०९ ॥ कनक कलश
स्यंदन पैं दीनो। मंत्रित बेदमंत्र सों कीनो॥ आशीर्वाद
सहित अनुदेश। चले सुरथ चढ़ि हरषि विशेष ४१० ॥ साथ
खलित गाचन करि करिकै। वीर अनेकन चले अकरिकै॥ बाजन
इन्द अवाजहिं साजहिं। जो सुनि अम्बर अंबुद लाजहिं ४११ ॥

दो० कमलमाल उरमहं लसत अमल भरत दिशिवास।
कानन कुण्डल झलमलैं रविसम करैं प्रकाश ४१२ ॥

नरेश छन्द ॥

धनुशायक सोहत हाथसैं। भटरा जहिं कोटिन साथसैं॥
सर सुन्दर चाप फिरावते। असिभल्लन कों चमकावते ४१३ ॥
तिमि सेनप सोहत बांकुरे। उर वीरपने कर आंकुरे ॥
सधिव्यूह विराजत नौनहैं। दुरजोतनयोम सुभौनहैं ४१४॥
संग लाखन वारन झूमते। हयमण्डल के मन घूमते ॥ रथ
राजहिं गाजहिं मोदकों। छिदेसारथि हाय प्रतोदकों ४१५॥
चहुंओर चली चतुरङ्गिणी। जिमि सावन मास तरङ्गिणी॥
वर बाजि नचावहिं भावने। सबदेवन दुःखनढावने ४१६ ॥
अति दानव सेन विराजई। जहं भेरि अनेकन बाजई ॥
लखि देवकुथिनि लाजई। उरमैं अतिसंशयछाजई ४१७॥
असिशूल परश्वध औगदा। शर शक्ति भुशुण्डि चलैतदा ॥
अति गर्जहिं वीर भयावने। रणतर्जहिं शत्रुडरावने ४१८ ॥
भट मल्लवजावहिं जोरसों। ध्वनिपूरहिं दोनहुंओर सों ॥
धरुमारु पुकारहिं सोरसों। सबशस्त्रचलैं सबठौरसों ४१९ ॥
तुरही सहनाइ सोहावनी। बहुबाजहिं मेघलजावनी ॥
मह्लादभिरे जमकालसों। धरुमारुपुकार करालसों ४२० ॥
उलकौं नभतें गिरतीभई। डरदव हिये धिरतीभई॥ कटु
नादनचलीं अति दूरितें। नभ पूरिगयो सबधूरितें ४२१ ॥

प्रह्लाद भरे अहलादसों। रणचाहत भे अतिस्वादसों ॥ सब
दानव देव सोहावने। मिलिजूटतभे भटभावने ४२२ ॥

दो० तबहंसिकै प्रह्लादजू बोले बचनबिशाल।
अरेकाल इन्हिकाल में तेरोकालकराल ४२३ ॥

चौपाई ॥

आजहमारे शरतेंमरिकै। सोहैंगे निरजर महिपरिकै ॥
सुरतें असुरमरे जेरणमैं। स्वर्ग सुखीह्वै हैं इन्हिचणमैं ४२४ ॥
आज अजा से भगि हैं देव। लखि हरिजन कहं हरि सम
भेव ॥ मेरे शर रविकिरणि समान। चमकहिंगे दशदिशन
महान ४२५॥आजमारिकै अमर समाजा। प्रमुदितकरिहौं
बलि निजराजा ॥ मेरो अक्षय चापसदाई। वर्षोंगो शर
वेग बढ़ाई ४२६ ॥ कोउन रहैगो मेरेआगे। लागेशर बनि
परिहै भागे ॥ खण्डखण्ड करि अरि केयुत्थ। महिमें घनी
लुटैहौं लुत्थ ४२७ ॥

दो० दिति नन्दन नन्दन विपिन आनन्दनतें पूरि।
बिहरहिंगेलखिअमर उरबिहरहिंगे दुखभूरि४२८॥

सो० इमिकहिकै हरिदास हरिसमान गरजत भये।
अरिशचुनउरत्रास दलनलगे दलरिसि छये ४२९ ॥
साठसहस्र सुतसंग धर्मधीर प्रह्लाद सम।
दाता सुमति सुढंग शस्त्रअस्त्र शत शास्त्रधर ४३० ॥

कोकिलछन्द ॥

असिशर शक्ति शूल परिघा धनुबाण गदा। तजनलगे
महान रिसिकै बर वीर तदा ॥ रण रस पूरि पूरि उरमैं
अतिकोपभरे। करिरिपु चूरिचूरि तुमैंदरशाहिंखरे ४३१ ॥
फिरिफिरि फेरिफेरि रथकों रण अंगनमैं। तजितजि बाण
लोहूभरते भट अंगन मैं ॥ गरजत तर्जि तर्जि सुदसों छवि
छाइरहे। वर्षत बाण मेघसम चापबजाइ रहे ४३२॥ दिति
सुतजह मोद भरि युद्ध बिहारि रहे। रिपुगण कों अपान
करि भूमहं डारिरहे ॥ मणिगहना सुधारि तनतेज पसारि
रहे। मुकुट बनेजड़ाउ लखि सुरन हारिरहे ४३३ ॥ असुर

अजेय काल संग संगर ठानि रहे। निजजय हेतु बीर धर मार बखानिरहे॥ गज रथ अश्व बीर भिभिमारि मचाइ रहे। सर असि शूल शक्ति दुहुंओर चलाइरहे ४३४॥ इत भटकाल कालहग ढाल कृपाण लिये। चलेउ कराल कोप करि समरचोपहिये॥ संगमहं व्याधियूथ बज्रदण्डहि हाथ धरे। सदल बढ्यौ महान बल ज्युहि सायकरे ४३५॥

दो० गरज्यो चण्डउदण्ड अति कालवीर बरिबण्ड।
ब्रह्मण्ड खण्डन करन तेज तरुन मार्त्तण्ड ४३६॥

सो० धस्यो शत्रुगण माहिं धरुधरु मारु प्रहारु कहि।
वर्षनलग्यो तहांहिं असनि गदा असिशक्तिशर ४३७॥

चौपाई॥

प्रह्लादहि प्रचारि अति भारे। आयुध सकल सरादि प्रहारे॥ व्याधि बधहिं बलनिधि दितिपूतन। दानव व्याधि हन्द मजबूतन ४३८॥ केतेपरे शूलतें हूले। रुधिरभरे किंशुक जिमिफूले॥ केतेकाटे खड्गतेंराजैं। केतेभिन्न शक्तितेंछाजैं ४३९॥ केते परिघ पटातें छेदैं। केते परे बाणके भेदे॥ केते भिण्डिपालतें मरे। केते परे पाशबंधि गरे ४४०॥ केते करि करि बसन दुरुखी। कस्योकरि बैठे भरिसुखी॥ केते व्याधिदनुज पुनिकेते। भरे परेमहि शोभा देते ४४१॥ भयो तुमुल रण शब्द प्रचण्ड। भरिगो यह अखण्ड ब्रह्मण्ड॥ धरु धरु मारु मारु धरु धाय। जहं सुनिये तहं यही सुनाय ४४२॥

दो० दनुज पाल अरु कालहूमि भिरेकोपि तेहिकाल।
छये व्यालबिकरालसे रणबिशाल शरजाल ४४३॥

अमृतध्वनि॥

परमबली प्रह्लाद भटबढ़ै बढ़ै जिमिनद्द। देवनसों भिरते भये शोभित करि रणहद्द॥ हद्दद्दबरि मरद्दद्द पटिसमद्द-द्दटिवज्ज। कद्दद्द सतरु रद्दद्दरभि दुरद्दद्दबिरज्ज॥ मद्दद्दसन अरद्दद्दसत बिसद्दद्दरधर। जद्दद्दनुज दद्दद्दरशत मद्दद्दरि पर ४४४ [illegible]निमल्लै गजराज जिमि शिखि दाहै द्रुमखण्ड। तिमिनाश्यो प्रह्लादनै अरिदल धंसिकरि भण्ड॥ भण्डहुर्ग[illegible]

अतुण्डडुगर अमुण्डडुोलत । भुण्डडुरनिअकुण्डडुपटि अपुण्ड डुोलत । भुण्डडुगत भुमुण्डडुग गतभुण्डडुोलत । भुण्डडुगमग रुण्ड डुकरि बितुण्ड डुोलत ४४५ ॥ कियकराल रण काल हगजाल्हिर थोधा जग्ग । परकुल काल बिशाल करलिये ढाल अरु खग्ग ॥ खग्गग्गहि जगमग्गग्गरजि उमग्गग्गन लय ॥ उग्गग्गति डगमग्गग्गहि उदग्गग्गत भय । जग्ग ग्गरद समग्गग्गठन सुभग्गग्गति लिय । मग्गग्गरदि अद- ग्गग्गजगत पग्गग्गरकिय ४४६ ॥ सतसहसन बिधि असुर बर मारि करी अतिजव्वरसत । अव्वव्वथतम सव्वव्वकत गज- व्वव्वदिमत । ढव्वव्वकुत अजव्वव्वधत चरव्वव्वनिसत ४४७ ॥

दो० इमि भगाइ दल कालको कालसरिस धनि चाप ।
धनुध्वनि दिशिपूरणकरी शंख बजाइ सदाप ४४८ ॥
भिरे काल प्रह्लाद दोउ कोपभरे तेहिठौर ।
इनसों भटकोउ जगतमें भयो नह्वैहै और ४४९ ॥

सो० कछुककाल लरिकाल सहिन सक्यो बिकरालशर ।
तज्यो समर उत्तालगज्यों दानव पाल तब ४५० ॥

चौपाई ॥

अनुह्लादबजवावत भेरी । भिरो सकोप धनदकहं टेरी ॥
वर्षेउबाण बारिधर जैसे । तेसब सर्प सरिस तनऐसे ४५१ ॥
धनकसमानमहाबलसाली । दीनवमनि भटमनिमनिमाली ॥
जाल बिशाल बाण को रचिकै । रणमहि रहो काल सो नचिकै ४५२ ॥ मर्दिमर्दिकै सुर्दनके ठट । अटवी पूरिदई भटसों भट ॥ सोहत रण अंगन रुचिकारी ॥ जिमि बसन्त प्रफुलित तरुभारी ४५३ ॥ कढ़ीरुधिर सरिता अतिभारी ॥ कटेअंग अगणित झषधारी ॥ पंकमेदको आन्तसेवार । फेन मीपराजै मधिधार ४५४ ॥ गीधहंस सारस जहंकांक । बेला सरिसयेऊ दलबंक ॥ करपग कमल कुमुद अधिकाई । खाल बिसाल परीकछुं काई ४५५ ॥

दो० अनुह्लाद के बाणासों बिमुख देखि निजसैन ।
भिरे चापटंकारिकै धनाधीश बलऐन ४५६ ॥

त्रिभङ्गीछन्द ॥

धनुकोविकरारो शब्द पसारोतिहुंपुर सारो पूरिगयो । दनुजै ललकारो बल विस्तारो भरभर मारो तेज भयो ॥ सोंवाण गरारो अरिहिय फारो धरनि सिधारो बेगह्वयो । जिमि परवत कारो बिज्जु बिदारो तिमि भटभारो लसत भयो ४५७ ॥ तब दानव नायक सब बिधिलायक मारेसायक कोपि अती । तिनबर्महि छेद्योहिय कहंभेद्योरणमहं खेद्यो यच्छपती ॥ पुनिगरजन अतिकै तीतन मतिकै यच्छन हतिकै भूमिभरी । तबसंकट पागीसेनाभागी लखिरिसिजागी तौन घरी ४५८ ॥ धनुलै धननायक बरसण चापक परदुखदायक बाणहनै । तेसब अरितन में प्रविशे छनमें पविजिमिघनमैं निशितबनै ॥ तेहिसहिकरि घनरवदानवपुंग बरणकोपित औरूप धस्यौ । अतिरातै लोचन सुरमद मोचन निज भट रोचन नाद कस्यौ ४५९ ॥ द्रुम बिटप उखारो सुर पर मारो दलहि बिदारो आसुतहां । जिमि लखि खग राजैं खग भय साजैं तिमि सुर भाजैं धनदजहां ॥ पुनि धनपति घोरन बधिशर ओरन जमपुर ओरन पठैदियो । पुष्पकचढ़ि वाहन तब नर वाहन पर दल दाहन युद्ध कियो ४६० ॥ तेहि क्षण रण पर्वत रच्यो असुर सत गजतन दरशत शिखर जहां । भट बिटप अनेक सुमन आभरण निरझर सुरतन रुधिर तहां ॥ सुन शिवासार खगकाक गीध खग राजहिं तानग समर पथो । महि भांत बिलाशी बिबिध लतासी कंदर खासी बिभरथो ४६१ ॥ मनि पंगति जाहि रहे पल बाहिर सोई जवाहिर खानि बनी । जहं तहं बानाबलि लसति अतिहि भलिसो भ्रमरावलि सरसघनी ॥ गजके शिर सोहहिं लाखन जहिं तहिं ते तागिरि महिं मतवाले । औषधिसे मग मग सर फलता नग दरशहिं रणमगअति आले ४६२ ॥ इमि संगर भारी सुरभयकारी । सुभट सुरारी जोर रच्यो । धरु मारु मारु धरु भागु भागु टरु ना टरना उर शोर मच्यो ॥ योधा बहु गरजहिंहहि

मेतर्जहिं बाण विसर्जहिं ताकिपरै। इतउत बऊधावहिं ग्रोर मचावहिं नाम सुनावहिं डारि डरै ४६३॥ केतेनरि गिरते रण महि थिरते तिनपर फिरते कंकतहीं। बऊबली अकरते संगर करते जरते डरते नेक नहीं॥ हय बारनके टट करहिं कटाकट बीर पनो भट खोलिरहे। पखरा कारि ढालहिं लैकर बालहिं ग्रगु कपालहि तोखि रहे ४६४॥
दो० इमि तापत्न के युद्ध में बनिकै मेर कुबेर।
अरहि बरषि मरदत भये असुर ढेर तेहिबेर ४६५॥
चौपाई॥
तब प्रह्लाद अनुज रिसिछाई। शैल सरिस गुरु शिला उठाई॥ मारी कोपि धनद के ऊपर। कूदि गये लखिसो रण भूपर ४६६॥ अंगन सहित सुरथरण अंगन। चूरभयो लै सुभगतुरंगन॥ तब धनपतिके गणकहं सोई। बधन लग्यो कृतान्त सम होई ४६७॥ मारि मारिकै भट समुदाई। डारि डारि सब पुहुमि पुराई॥ पुनि उठाइकै महा पहार। धनपति ऊपर कियोप्रहार ४६८॥ तदा गदाकर लै नर बाहन। मारत भयो कयो उच्छाहन॥ सहितेहि दनुजलालकरि लोचन। गरज्योप्रबलअनु मदमोचन ४६९॥ मास्यौ बज्ररि महागिरि गहिकै। तेंअब आज बचत नहिं कहिकै॥ धनपति भये निधन से लागे। रण महिं परे चेत कहं त्यागे ४७०॥
दो० धनाध्यक्ष कहं विकल लखि वैरिरक्ष अरयक्ष।
रक्षत भये प्रतक्ष सब समर विचक्षन दक्ष ४७१॥
मोटक छन्द॥
विस्सेश्वरनै तब चेतगह्यौ। युद्धांगनमें चढि मारकह्यौ॥ भोगर्जत कोपि महारणमें। ब्रह्मांड गयो हलि बाणनमें॥ ४७२॥ कालानल सोनर बाहनकों। देख्यौ धरि मस्तक ढाहनकों॥ भागेडरि दानव त्रासभरे। दैत्येश कह्यो तबको पधरे ४७३॥ हेहे अतिनेमि सुनेमिबली। दानोंदल रक्षक हैवदली॥ क्योंभागत प्राशत से डरिकै। जैहो कित

संगर तें टरिकै ४७४ ॥ मैं मारतहैां जगमैं धनदै । देखो रणको अपनो मनदै ॥ मारे सुनि दानव यूथ फिरे । भारे बढ़िकै अढ़िकाेप भिरे ४७५ ॥ लागे करिबे घट मार घने । पागेरण मैं रणधीरबने ॥ मारैंपरिघा असिप्रासगदा । थारैं रण चोपहि पूरिमदा ४७६ ॥ जूटै बक्र आयुध हाथधरी । टूटैं हरिसे अति नादकरी ॥ मूका थपरा तल तें मरदैं । काेपान्वित ह्वै अरिकों अरदैं ४७७ ॥ पिंगाक्ष दइत्य दोऊ बढ़िकै । पंचाननसे दरसों कढ़िकै ॥ पूर्व्वोदिशि वायपहारनतें । धस्यै रिपुचण्ड प्रहारनतें ४७८ ॥ दोऊ अरिकाेप महाभगरे । बीतुण्ड समानकरैं रगरे ॥ पूरीमहि ग्रनुनको हतिकै । बांसैनहिं काेउ इहै मतिकै ४७९ ॥ चारो दिशि युद्वपरे सुरदा । छयो उनपै रणको गरदा ॥ काटे महिपैं गजबाजि परे । बोझ् कनतें सब अंग भरे ४८० ॥

दो० तब दश सत थित बाणतें काेपित दनुज प्रधान ॥
बेध्यो यक्ष प्रधानकहं घन सम गर्जि महान ४८१ ॥

चैापाई ॥

तातें थवतरुधिर तनकैसे । श्याम शैल बक्र निर्झरजैसे ॥ बक्करि विकल ह्वै धीरज धारी । गरजि गदा दानव कह मारी ४८२ ॥ देखि गदा धन पतिकी आवत । भयो दनुज निज गदा चलावत ॥ लरिमग उभय परीं वेकैसे । गर प्रयोग पर पुनि गर जैसे ४८३ ॥ तब गहि गदा औार धन नायक । चले गरजि रिपु पैं दृढ़ घायक ॥ सोलखि महा शैल धरि हाथ । इततें बढ्यो दनुज कुलनाथ ४८४ ॥ तिहि गिरि धरे लख्यो नर बाहन । काल सरिस आवत रण चाहन ॥ चास सहित ह्वै बुद्धि निवास । डरि टरि गये इन्द्रके पास ४८५ ॥

दो० इमि लहि विजय कुवेरतें दनुज सेरतिहिबेर ।
फेरिफेरि धनु बधिकरी ढेर भटन काेढेर ४८६ ॥

सो० विमं चित्तके संग वरुण जंग करते भये ।
उरमहं भरे उमंग रंगेरङ्ग रणके महा ४८७ ॥

मनोरमा छन्द ॥

दिति सुवन को शरमारि महाकहं। सहिनाहिं सके जलनाथ बलीतहं ॥ हगलाल किये तिहिकाल महामति। रणराजत भेदलपाल धरेरति ४८८ ॥ पविव्यूह महाविरच्यो रिसितें भरि। संगसोहत हैं भट शस्त्र घने धरि ॥ शरधार अखण्ड तजैंजिमि आपद। करिदीन बलीगणमैंअति आपद ४८९॥ रविसीवरक्रांतिभरी रणके मधि। बहुवीरन डारि दियेतितहीं वधि ॥ परिघाकहंधारतदैतभयो तब। तिहि जानत भे यमदण्ड तहां सब ४९० ॥ मणि चित्रित काम अनेकन राजन। रविसो परकाश सबै तम भाजन ॥ तेहि तौन भ्रमावत सोहत सो छलु। सुर नायककेतु फिरैं नभ मैं जनु४९१॥ लसतोसुभयो भटताहिघुमावत। वर कुण्डल क्रीट दिशा चमकावत ॥ छवि तासु लखी तहं वीरन है किमि। बज्र विद्युतके सह मेघ महाजिमि ४९२ ॥ परिघारन घूमत पौन बढ़ो घन। चितगी चहुंओरन घोरकढ़ी रण ॥ अरु शब्द महान बढ्यो रण अंगन। डर छायगई सब देवन के मन ४९३ ॥ रवि चन्दन छत्र दिशानभ साथहि। तित घूमत देखिपरैं भट हाथहि ॥ हरषे सब दानव जानि भई जयें। वरषे सुर सोचन आनि महाभय ४९४ ॥ बिन इन्द्र डरे सिगरे रण अंगन। सुनिकै परिघा पर भाव घनोगन ॥ तब त्यागेउ ताहि सकोप महाबल। जितहो जल नायक को सिगरोदल ४९५ ॥

दो० तापरिघा तें अयुत भटगये जहां यमराव।
तरे परेते पिसिमरे जरे तेजपर भाव ४९६ ॥

चौपाई ॥

इमि करि नाश वरुण के दलही। गर्जत भयो असुरता बलही ॥ बज्रहि घुमाय परिघ सो भारी। मारेउ जलपति कों ललकारी ४९७ ॥ लगि तन टूटि परो छितरायो। मनु शिशुमार टूटिमहि आयो ॥ ताके लगे बरत भे ऐसे। अरके वरणि धरणि धर जैसे ४९८ ॥ मरे अनेकपासके बीर। सुर

सशि व्यथित भये अति पीर ॥ पुनि भरि कोप पराक्रम
शाली । बरषेबाण असुरपरहाली ४९९ ॥ लिये संग भखनक्र
भुजंगन । सरित सिंधुसह जंग उमंगन ॥ श्वेतबसन मोतिन
की माल । श्वेतछत्र शिरफिरत रसाल ५०० ॥ निजवीरन सों
जलपति ऐसे । जलपत तुम अब करहु अभैसे ॥ मैं बधिहैां
दानवसिरताजहि । इमिकहि कीन्हेंांशब्द दराजहि ५०१ ॥
दो० तबसब अट दिगपालके गरजि गरजि गहिचाप ।
शरकर बरषाकरतभे भरिकै दिशन प्रताप ५०२ ॥

नाराचीधर-छन्द ॥

शत्रुके यूथकों वेगसों देखिकै । दैत्य को भूप सो युद्ध मैं
तेखिकै ॥ बैनते याखकोछांड़िदेतो भयो । नागमैं त्रास कों
सांड़ि देतो भयो ५०३ ॥ युथ्थके युथ्थनागारिके धावते ।
खातज्यौं भातत्यौं नागकों खावते ॥ टूकह्वै सर्पकेते धरा
राजते । देखिकेते भरे त्रास सों भाजते ५०४ ॥ यों बधे वीर
भारे जलाधीशके । भूमिराजैं परेते बिनाशीशके ॥ देखिसो
देव टंकारि कोदण्डकों । युद्धधाये धरेयुद्धके ढंगकों ५०५ ॥
देखि दानवभयो तालकों ठोंकतो । सिंधुकोंतीर ज्यों त्यों
परेरोकतो ॥ प्राण भै छांड़िकै जीति आशावरे । क्रुद्धपाशी
बड़े वीर्य राशीलरे ५०६ ॥ देव योधा तबै बेगसों कोपिकै ।
बाण के इन्द दैत्यै दियो तोपिकै ॥ देखि सो क्रुद्ध ह्वै सिंह
शोचिकस्यौ । आसुहो शत्रु के शस्त्र नासै कस्यौ ५०७ ॥
मारिकै बाण बारीशके जानके । अश्वमारैा सुकीने बिना
प्राणके । बाण बरष्योनहोरौदशौं औरसैं । पूरिदीनी महा
त्रासता ठौरमैं ५०८ ॥ मारिकै डारिदीने घने वीरकों ।
रारिकै फारिदीनी घनेधीर कों ॥ जारिकै छारज्यां अग्नि
तूलैकरै । बिप्रचित्ती तथाशत्रु सूलैकरै ५०९ ॥
दो० इमिदानवतें त्रसितह्वै सदल बरुण बलसीव ।
भागेसुर बर शक्रढिगभगे यथा अतिक्लीव ५१० ॥

चौपाई ॥

देव पराजय लखि रिपु नाशन । परमकोप कहं गहै

हुतासन ॥ पिंगल नयन विष्णु सुखदेव । शिखि हिरण्यरे-
तावर भेव ५११ ॥ सहस अर्चिवर ब्रह्म अनूप। पावक हव्य
कव्यभुकरूप ॥ चित्रभानु मतिमान महान । स्वाहास्वाधा
नाथ भगवान ५१२ ॥ सप्तअर्चि सब पाप विनाशन । ईश
हिरण्य गर्भ परकाशन ॥ हव्यभाग धर हरि अवि नाशी ।
रुद्रस्वरूप विश्व घटबासी ५१३ ॥ धूमकेतु जगहेतु धनंजय ।
पावक पुण्य रूप समतिंजय ॥ नीलवसन भूषण निज रंग ।
वायु चक्ररथ नीलतुरंग ५१४ ॥

दो॰ जौनपंचधा होइकै करत सबन मैं बास ।
सोइअरिनाशनहितचले करतदिशन परकास५१५॥

सो॰ अग्निअस्त्र करधारि अग्निकोप विस्तारिकै ।
गर्यौउयुद्ध प्रहारिदैत करोंरन मारिकै ५१६ ॥

कवित्त ॥

जारि जारि दीनेकरि छारि छारि शत्रुगण चारि चारि
रथपथचतुरंग टारिटारि । मारिमारि भटठट पारिपारि
दीनेकिते दारिदारि तनकहं रथदए डारि डारि ॥ धारि
धारि चोप परघात वारि वारि दए बारि बारि पट तब
तिन दए फारि फारि । हूमि हारिहारि असरारि रारि
पावकसों भारिभारि करकों पराएदृग ढारिढारि५१७ ॥
जरततुरंग तंगसहित सुरंग अतिजरत मतंग जेउतंगअंग
कारेहैं । जरत सुरथ संग परम सुढंग गति विगत उमंग
सुत धूत जेगरारे हैं ॥ भटबड़ जरत निखंग धनुवाण धारे
जंगल भुजंग समजंगरो सवारे हैं । संगर के संगतें कुरंग
सुख भागैं दैत्य ज्योंकुरंग भंगमन सिंहके प्रहारे हैं५१८ ॥
लवर अकाशन प्रकाशन भरत भूमिनाशन अवलिपिसिता-
सन लसो महत । शासन महीप पाक शासन को धारि
शिरसाथ लैवताशन सिंघासन वलीट्हत ॥ हासन दहत
विशिखासन धरनहारे आवत सहासन जेपासन रथौचहत ।
आरन मैं मासन की राशिकरी जापैं कांक्षावहिं तमो-
वन हुताशन को जै कहत ५१९ ॥

दो० भागे अतिही विकल ह्वै सकल असुर समुदाय।
देखिसके नहिं अग्निको भग्नितभये अचाय ॥ ५२० ॥

चौपाई ॥

जे सेनापति प्रबल गनाए। ते सब भागि गए भय छाए॥ सब संबर अरु मय बल धाम। दोउ मायावीभट सर नाम॥ ५२१ ॥ घुमड़ि घुमड़ि घन सरिस अपार। बरषत भए घोर जल धार॥ तातें हव्य वाहबुत गए। तब सब अमर शोक युत भए॥ ५२२ ॥ सो लखिकै अंगिरा कुमार। आइ करी अस्तुति उच्चार॥ कनक रेत अक्षय रिसि रसना। सबभुकके बिज्ञानकृत असना॥ ५२३ ॥ आत्मा पवन तुमारे अहहीं। आप आपतें आगम कहहीं॥ पावक दयक दिसा सब तोरी। किरिण मकाशहिं कांति अघोरी॥ ५२४ ॥ तुमसब जगत रूपहौ पूरे। पालक करक हरक तुम रूरे॥ हव्यासन तुममखके राइ। तुमहिं यमहिं मुनिके समुदाइ॥ ५२५ ॥ तुमहिं अन्न पावन कहं करहु। तुमहिं प्रसन्न होय जय धरहु॥ तुमहिं प्रकाश करत नहिंदूजो। तुमहिं विरंचि विष्णु हरपूजो॥ ५२६ ॥ तुमहि सकल देवनके राई। तुमहिं प्रतिष्ठा तिष्टहुभाई॥ तुमहिं औषधी रसके करता। तुमहिं प्रलय महं जग संहरता॥ ५२७ ॥ देवनके हितजन सुखदाई। तुम बज्रवधे दैत्य समुदाई॥ तुम सर्व्वज्ञ करहु जो चाहौ। रिपु बस परिकै दीन कहा हौ॥ ५२८ ॥

दो० मारहु रणमैं दानवन टारहुसुरको भार।
धारहु अपने तेजकहं जारहु शत्रु कतार ५२९ ॥
धूमकेतु अति धूमतें सुर हजूमलै जूमि।
भूमि भरहु सुरदानतें सुभटठानतें भूमि ५३० ॥

चतुष्कला ॥

धुनिकै। गुणिकै॥ मनभै रणमैं ५३१ ॥ बरभट। शिखि झट॥ रिपुहित। प्रजुलित ५३२ ॥ भेभल। तायल॥ दिति के। सुतके ५३३ ॥ दलमैं। पलमैं॥ दहिजिय। दुखदिय ५३४ ॥

कोपहि। चोपहि॥ घरिसत। दाहत ५३५॥ भटहय। रथ गय॥ दहिदहि। सबंमहि ५३६॥ भरिदिय। मुदिहिय॥ इमिसुर। भटघुर ५३७॥ जयलहि। रणमहि॥ राजित। भेहित ५३८॥

दो० ज्वलनज्वलित जब होतभे मायागई नसाइ।
कहत भये प्रह्लाद तब बलितें बलहि बढ़ाइ ५३९॥

चौपाई॥

तुमहिं अग्नि रवि जल ससि व्योम। दिसि नक्षत्र पवन पुनि सोम॥ भूत भविष्य भवतके ज्ञाता। तुम सर्वज्ञ दियो वरधाता ५४०॥ अमर अजेय अरुज अविनासो। हरितुमरे घट अन्तरवासी॥ तुमजो करनचहौ सोहोय। तुमसम है जग अपर न कोय ५४१॥ तुमहिं कीन्हविधि सवबिधिउत्तम। रण विक्रम वरदानव सत्तम॥ मारहु रिपु असुरन सुख छावहु। सुरन भजावहु शक्रबजावहु ५४२॥

दो० सुनिकै रण अतिवक्रह्वै चल्यो सदल जितशक्र।
मनहुं चक्रधर चक्रधरि चलेनिपातन नक्र ५४३॥

छप्पय॥

चलत हलतसह अचल धरणि दलमलत शेषफन। टलत कमठ वाराह दलत खलभलत शचुगण। छलत पवन उच्छलत सिंधु बिचलत दिगवारण॥ ढलतसुर रथजलत ज्वलन आदिक सुरकोमन॥ चलकाननकुण्डल भाल मलत कर कह बलि वर बल मलत॥ शुभसगुण सकलजय फलफलत। दुसमन दुख पलपलत ५४४॥ घूमिघूमि रण भूमि रुधिर की सरित बरह्वत। भूमि दुरदसम जूझि जबर कहुं विबुधन वह्वत॥ सिंहसमान महानकोप कहं ठानिनरह्वत। अरिन अरह्वत झपटि दपटिदटि मसकि मरह्वत॥ असिशूल शक्ति परिघा गदा हरषत वरसत दिशिविदिशि। सुरनासुआसु कीनो रणहिं रिसिधर बर परदल प्रविशि ५४५॥

दो० बलइंधन आयुध धुआंबेग वाहुंको वायु।
रिसिइततैं कालाग्नि बलिदाह्यो सुरसमुदाय ५४६॥

सबै सभै ह्वै अमर गण भागे बासव पास ।
हाथ जोरि बोलत भये विजय निराश उदास ५४७ ॥

चौपाई ॥

धाता इन्द्र अहऊ तुम नायक । ईश्वर अव्यय अनुपम लायक ॥ बलि मारे रण अमरण गनि गनि । हम आये रण तजि भय सनि सनि ५४८ ॥ ऐसो सुर अब अहै न कोई । जोइ सकै बलि की दिशि जोई ॥ सुरभूपक महं बिलसत बलि अहि । शक्र खगेश हनऊ तेहि रणमहि ५४९ ॥ बधऊ बेग सों असुर समूह । जासें विजय लहहिं सुरजूह ॥ सुनियौ चले कोपकरि रणमें । लसे अग्नि सम रिपु गणबनमें ५५० ॥ नागकेतु शिर बर फहराती । पवि कर धरि पवि सम घहराती ॥ नैन सहस्र जैन रिपु गणको । विक्रम ऐन चैन रव घनको ५५१ ॥ चारऊ ओर पढ़हिं द्विज बेद । सुख पर समर खेद को छेद ॥ महाधार शत शचु विदारण । कीन्हें हाथ वज्र को धारण ५५२ ॥

दो० दलत देखि निज सैनकहं बलि शक्रहि ललकारि ।
भिरिअद्भुतयुद्धहिकियो आयुधअमितप्रहारि५५३ ॥

हरिगीती छन्द ॥

आयुध अनेक प्रहारि दोउ भट घोर संगर करत भे कोदण्ड की टंकारसों दिशिचार महं ध्वनि भरतभे ॥ तहं भेरि भेरि सुभेरि नामहिं टेरि टेरि रिसाइ कै । शरछाइ महि नभलौं दिये निज फौज ओज बढ़ाइ कै ५५४ ॥ तेहि काल दोउ दल पाल लोचन लालकरि छाजत भये । शर जाल दिशन बिशाल रचि रण कालसे गाजत भये ॥ सुर-चंग चंग मृदंग संग उपंग बऊ बाजतभये । उरजंगजनित उलंग सुन्दर ढंगसों राजत भये ५५५ ॥ रणरङ्ग गङ्ग तरङ्ग महं चतुरङ्ग के भट न्हावहीं । तन अंग होत सुरंग अंग अनंगके सुख पावहीं ॥ चढ़ियानकरहिं पयानसुर असमान भानु प्रभा धरे । गन्धर्व गान बंधान सों सह अप्सरा संगमें खरे ॥ ५५६ ॥ रणधरा शोणित भरा छिर कर गरा

कढि कढि राजहीं। तन कटे कितने सुभट हयगय दशऊं दिशि महं भाजहीं॥ बक्र कंक स्यार अशंक रण महं रहे जित तित घूमिकै। लै रुधिर थाली फिरत काली मुण्ड माली झूमिकै॥ ५५७॥ तब पाक शासन असुर नाशन तजि जुताशन अस्त्रकों। झरिदई महितातें सकल बरबरषि अगणित शस्त्रकों॥ लखिअसुर वारुणअस्त्र दारुण त्यागि तेहि नाशत भए। पुनित्यागि शर असि असनि युग दर देव दल चासत भए॥ ५५८॥

दो० तब सकोप बज्रहि गहेउ बज्रपाणि तेहि काल।
मारनचाहेतहुंसुनीव्योमगिराहुरपाल॥५५९॥

चौपाई॥

फिरहु शक्र न थिरहु रण माहीं। बलितें विजय पाइहो नाहीं॥ यज्ञ प्रताप धरम आचरण॥ विद्या बुद्धिनीति बल धरण ५६०॥ है अजेय दानव सब बातन। इहि जिति हैं भगवान सनातन॥ ब्राह्मण बेद धर्म सुर रक्षक। विश्व परा गति अवगुण भक्षक ५६१॥ परतें परतर प्रबर परा-बर। गदा रथांग शंख अंबुजधर॥ सहस शीष सहसाक्ष सहसपद। पुरुष पुराण हरण दुसमन मद५६२॥ जेता अज अजेय गुण धाम। सो जीतहिंगे असुर ललाम॥ सो सुनि सुरन सहित सुरराज। फिरेसमरतें दुखित दराज ५६३॥ तब दनुजनके बजेनगारे। जय बलिकी सबकहहिं पुकारे॥ सिंहनाद करि करि मन मुंदहिं। दानव बीर समर महि कूदहिं ५६४॥

दो० पाइ बिजय पावत भये सुरपति पद बलिराज।
बलि सबतें जेते भये परम प्रबल शिरताज ५६५॥
मय शंबरकर पटह लै फिरे तिहूंपुर मध्य।
बलिकी बिजय सुनावते मन भावते अवध्य ५६६॥

चौपाई॥

अनुह्लाद प्रह्लाद मयादिक। रक्षहिं प्रजा धर्म मरया-दिक॥ शत पथ बर्तमानभो जग में। नीति रीति राजी

मग मग मैं ५६७ ॥ पाप तापकर भयो अभाउ । प्रगट्यो धरम परम परभाउ ॥ चारवरण आश्रम पुनि चार । भये विराजत धर्म अगार ५६८ ॥ चारु चार चरणनतें धर्म । राज्योमहि महिं उदित अधर्म ॥ बलिको राज सकल सुख बरसत । नर मुनि खग मृग नग जग हरषत ५६९ ॥

दो० बली बलिहि लखि धर्मयुत कमला अमल स्वरूप ।
आय भई भाषत बचन सुनहु दनुज के भूप ५७० ॥

चौपाई ॥

हे बलि मैं प्रसन्न तव ऊपर । देखि पराक्रम अतुलित भूपर ॥ भुज बल सुर बलहीन भगाई । तातें मैं आई हरषाई ५७१ ॥ तू दादा परदादा हूतें । जीत्यो जगत धर्मके बूतें ॥ बहुरि देखि हरि मैं मति तोरी । अहै कृपा तोपर अति मोरी ५७२ ॥ राजहु राज अकण्टक राजा । मैं तब भवन बसत सहसाजा ॥ हरि मनोरमा रमा सुजान । इमि कहि रही असुर अस्थान ५७३ ॥ छमा प्रभा धृतिही श्रुति कीरति । मुति नीति स्मृति प्रीति दयामति ॥ तुष्टि पुष्टि मेधा विद्या श्रुति । कांति शांति पुनि मुक्ति क्रिया गति ५७४ ॥ और इड़ादि जिती जगदेवी । बलिपैं रहीं रमा पग सेवी ॥ रिद्धि सिद्धि अपसरा विभूतिन्ह । शोभा लही प्रपूजि विभूतिन्ह ५७५ ॥

दो० इमि राजहि करते भये बलि दानव सरदार ।
धर्मभीरु नृपनीति वित शुचिसत बचनउदार ५७६ ॥

चौपाई ॥

इन्द्र सुरन सहरणतें भागे । रोयेआय अदिति केआगे ॥ सुनि विरतान्त सुतन को मातु । बोली भरि करुणा तें वातु ५७७ ॥ हे सुत महाबली बलिराजु । तुम न जीति सकिहै सहसाजु ॥ हरि विन कोउ नाहीं जगमाहीं । जीतिसकै जो असुरन पाहीं ५७८ ॥ तातें कहहु तातमों बाता । सो तुमरो हित करिहैं त्राता ॥ इमि कहिकै लै सुत समुदाई । कश्यप सदन अदिति चलि आई ५७९ ॥

गौर खरूप सुनीश पुरंदर। तप तें कृशित गात अति सुन्दर॥ शीवजटा मंडल दर्भासन। बल कल धरे भरे परकाशन ५८०॥ वरउपवीत धरे अति चारू। मनहुं मेरुतें सुरसरि धारू॥ अग्निहि होमि अगिनि में राजे। देखि देव के संकट भाजे॥५८१॥

दो० घेरि रहे ब्राह्मण बहुत हुतभुक से द्युति मान।
वेद मनहुं मूरति धरे परमा भरे सुजान ५८२॥

कवित्त॥

द्विज कोकिलादि से पठहिं वेद मंत्र द्विज ठौर ठौर यज्ञ कुण्ड किंसुक अनन्त हैं। दौर रहे शिष्यगण वन सधि भौंरकेसे सुमन सुगन्धित बिटपसम सन्त हैं॥ बौरे सुरसाल से रसाल हरिभक्ति बौरें गिरिधर दास केते साधु मति मन्त हैं। आश्रम में बैठे प्रमुदित ऋतु कन्त केसे सुरमणि हारे छवि धारेमुनि कन्तहैं ५८३॥सबसोंदुसहतप तपन समान दुरे कामक्रोध आदि ह्गदरशें नदिननिसि। नाना बिधिताप द्वन्द कमल समेत सूखि पापके तलावतेज परभाव दशदिसि॥ आरत बिपत्ति बन बेलि गणमूखों दीठि पाइ कै लुआरिडारे सलै मूढ दुखघिसि। गिरिधर दास लसे भीषम प्रभाव ऐसे ग्रीषम से साध लै सभी समरिसिन रिसि ५८४॥ सघन घटा सो धरे खग चर्मचारु बकपंगति सोधरे उपवीत बरतनमैं। गिरिधरदास पवि पीत सो है जटा सोह फूलन की माला इन्द्रधनुलसै घनमैं॥ सतकथा धारावरसावैं सुख सरसावैं प्रेमरूपी सरिता बढ़ावैं चाहि मनमैं। मोर से नचावैं मन मन्द के किशोर आगे पावस बिराजे मुनि रानद मुनि गणमैं ५८५॥ इन्द्रीन दीनदजोर जीति कियो दूर [illegible]ख्यो ज्ञान कर्म वारि को प्रमाण लौं महा वरद। शंकपंक सूख गए मोहतम रूपमेघ नेकुना दिखातिहै कहूं कुवास नागरद॥ गिरिधरदास चित प्रफुल्लित पंकज से शीतल सुभाव पौन हरत सबै दरद। सुजस अमल सोम लसो जग ब्योम मुनि उड़गण तो मसह

काश्यपलसे सरद ५८६ ॥ हरिमाया जोर जग दुसहदिवाकरकों हरि भक्ति शीतबल तुच्छ करि मतिमन्त। गिरिधरदासतन दिन छयकरि ध्यान धारना बढ़ाइ राति बरिस भली समंत ॥ उज्ज्वल सुयशछायो तुहिन समान भुवदंत विद्यारथी खफछठेपठते दिगंत। ऐसेलखि वैसेसब अदिति सुतन पितु अदिति पतिहि निमित्तु दरसे हिमंत ५८७ ॥ नाना मखकरैं अति आगि है सब सबहि प्रिय धूम दिशि छायो सो निहारसोपरै निहारि। पाइहिम योगके संयोग के संयोग कों विरागवारि महा शीतलय तापहरलेउ निरधारि ॥ गिरिधरदास खान पानरस भोग रूप कर्म ज्ञान अर्चनादि विधिश्रुति अनुहारि। शिशिरसमान देख्याजनक सुरनवेद सिरपाठभतकरति कान दुखहारि ५८८ ॥
दो० ध्यान धरे शी शंभुसे भरे भागसों भूरि।
अमलमरीचि मरीचिसुतकरत दिशातमदूरि ५८९ ॥

कवित्त ॥

कैधौं जानि युद्धतें बिमुख दृगमूंदि लीने कैधौं बलिबीर धर्म धीर तानि हारे हैं। कैधौं दोऊ बंश हानि जानि मन मुनिरायभये मौन कैधौं भवितव्यकों बिचारैहैं ॥ कैधौं जग ओर तें सकोर कीनों मनिजन गिरिधरदास वेदबाक निरधारे हैं। काश्यप जू कैधौं देव देव बासुदेवजू को ज्ञान के निधान बुद्धिमान ध्यान धारैहैं ५९० ॥
दो० इमि निहारि जनकहि तबै सबै देव शिरनाइ।
हाथ जोरि वृत्तान्त कहं दीनें दीन सुनाइ ५९१ ॥
चौपाई ॥
हंसिकै कहतभये मुनिज्ञाता। चलउ तहां जहं अहहिं विधाता ॥ इमि कहि सुतन सहित सुत के हित। काश्यप गयेसभाबिधिकीजित ५९२ ॥ देखी सभाबिभासत आसा। कौन कहै छवि तौन खुलासा ॥ श्रुतिकर शब्द सकलश्रुति पूरो। मनभो हरो गयो श्रमदूरो ५९३ ॥